thearyasamaj.org

ओ३म्

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

अष्टांगयोगादेव तु आत्मशुद्धिः

राष्ट्र,धर्म व मानवता के सबल रक्षक-
वेद, यज्ञ-योग-साधना केन्द्र आत्मशुद्धि आश्रम
बहादुरगढ़ की मासिक पत्रिका

मार्च 2015

मूल्य 15 रू.

आत्म-शुद्धि-पथ

मासिक

स्वामी शक्तिवेश जी का 26वां बलिदान दिवस झज्जर में मनाया गया।

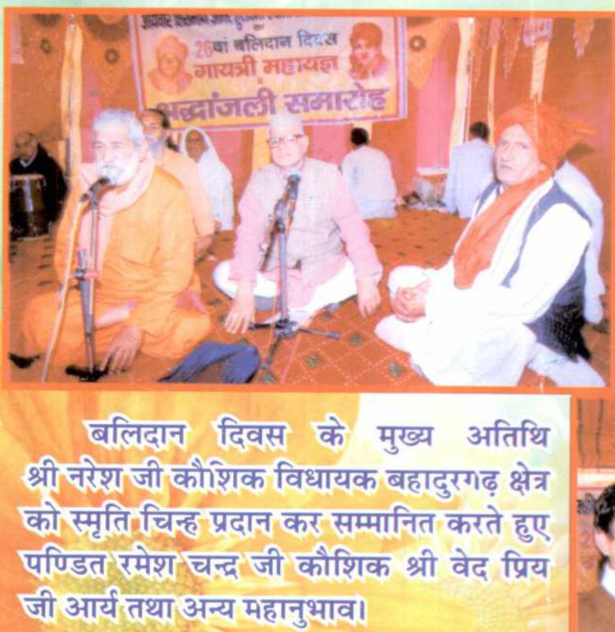

वैदिक सत्संग मण्डल समिति के तत्वावधान में आयोजित अमर हुतात्मा स्वामी शक्तिवेश जी महाराज का 26वां बलिदान दिवस टीला मौहल्ला झज्जर पर स्वामी धर्ममुनि जी मुख्यधिष्ठाता आत्मशुद्धि आश्रम बहादुरगढ़ अपना अध्यक्षीय उद्बोधन देते हुये। साथ में बैठे हैं ईशमुनि जी, पं. रमेश चन्द जी कौशिक, पं. जय भगवान जी आर्य तथा अन्य।

बलिदान दिवस के मुख्य अतिथि श्री नरेश जी कौशिक विधायक बहादुरगढ़ क्षेत्र को स्मृति चिन्ह प्रदान कर सम्मानित करते हुए पण्डित रमेश चन्द्र जी कौशिक श्री वेद प्रिय जी आर्य तथा अन्य महानुभाव।

(विवरण पढ़े पृष्ठ 4 पर)

thearyasamaj.org

ओ३म्

ओ३म्

आत्मशुद्धि आश्रम संस्थापक कर्मयोगी पूज्य श्री आत्मस्वामी जी महाराज

योग दर्शन के प्रकाशनार्थ सूचना

महर्षि पतंञ्जलि प्रणीत योगदर्शन पर अनेक व्याख्याएं एवं भाष्य उपलब्ध हैं। फिर भी योग ऐसा जटिल एवं अनुभव जन्य विषय है कि योग दर्शन के सूत्रों की व्याख्या की अपेक्षा बनी रहती है। मैं भी योग विषय में लम्बे समय से लगा हुआ हूँ और साधनारत हूँ। मुझे भी योग विषयक अनुभव हैं। अतः कई सज्जनों के आग्रह पर स्वयं की लिखने की रूचि न होते हुये भी, योग दर्शन के सूत्रों पर स्वतन्त्र और संक्षेप में मनोवैज्ञानिक, सरल व अनुभव के आधार पर व्याख्या लिखी है। पुस्तक छपने के लिए तैयार है। दानी सज्जनों से निवेदन है कि अपने किसी व्यक्ति की स्मृति में छपवाकर उनकी स्मृति चिर स्थायी बनायें। 1000 प्रतियां की लागत लगभग 50000/- रूपये आयेगा। दानी महानुभावों का रंगीन चित्र पुस्तक में छापा जायेगा। आशा है दानी सज्जन योग के प्रचार प्रसार में दान देकर पुण्य के भागी बनेंगे।

– राजहंस मैत्रेय, आचार्य आत्मशुद्धि आश्रम

आत्मशुद्धि-पथ के नये आजीवन सदस्य बनें

श्री प्रदीप सिंह जी ढुल एवम्
श्रीमती सुजाता ढुल
रेल विहार, गुड़गांव, हरियाणा

श्री तिलकराज जी सिंघल
गुरुहर कृष्णनगर, पश्चिम विहार, दिल्ली

881 श्री ओम प्रकाश जी जिन्दल
मेडिकल स्टोर, ताबड़ू,
जिला-मेवात, हरियाणा

प्रिय बन्धुओं! मास मार्च में अधिक से अधिक संरक्षक सदस्य एवं आजीवन सदस्य बनकर आगामी अप्रैल अंक को अपने चित्र व नाम से पत्रिका को सुशोभित करें। सभी सदस्यों से निवेदन है कि वार्षिक शुल्क (मनीऑर्डर/ड्राफ्ट) द्वारा शीघ्र भेजें अथवा इलाहाबाद बैंक कोड संख्या IFSC-A0211948 में खाता संख्या 20481973039 में सीधे जमा कर सकते हैं। जिससे पत्रिका आपके पास निरन्तर पहुँचती रहे।

– व्यवस्थापक

thearyasamaj.org

॥ ओ३म् ॥

आत्म-शुद्धि-पथ (मासिक)

फाल्गुन-चैत्र सम्वत् 2071 मार्च 2015

सृष्टि सं. 1972949115 दयानन्दाब्द 190

वर्ष-14) संस्थापक-स्वर्गीय पूज्य श्री आत्मस्वामी जी (अंक-3

(वर्ष 45 अंक 3)

प्रधान सम्पादक

स्वामी धर्ममुनि 'दुग्धाहारी'

मो. 9416054195, 9728236507

आचार्य राजहंस मैत्रेय, मो. 9813754084

❖

सह सम्पादकः

आचार्य विक्रम देव (मो. 9896578062)

❖

परामर्श दाताः गजानन्द आर्य

❖

कार्यालय प्रबन्धक

आचार्य रवि शास्त्री

(8529075021)

❖

उपकार्यालय प्रबन्धक

ईशमुनि (9991251275, 9812640989)

अखेराम सरदारो देवी आत्मशुद्धि आश्रम

खेड़ा खुर्रमपुर रोड, फर्रुखनगर, गुडगांव (हरि.)

❖

व्यवस्थापकः **चन्द्रभान चौधरी**

❖

सदस्यता शुल्क

संरक्षक	: 7100 रुपये
आजीवन	: 1500 रुपये (15 वर्ष के लिए)
पंचवार्षिक	: 700 रुपये
वार्षिक	: 150 रुपये
एक प्रति	: 15 रुपये

विदेश में

वार्षिक : 20 डालर आजीवन : 350 डालर.

***कार्यालय* : आत्मशुद्धि आश्रम बहादुरगढ़**

जिला-झज्जर (हरियाणा) पिन-124507

दूर. : 01276-230195 चल. : 9416054195

E-mail : atamsudhi@gmail.com,
rajhansmaitreya@gmail.com

अनुक्रमणिका

विषय	पृष्ठ सं.
विविध समाचार	4
वेद सन्देश	6
सम्पादकीय : विश्राम की आवश्यकता है	7
ब्रह्मविद्या का अधिकारी	8
मानव जीवन का का परमादर्श संन्यास	9
धर्म, मत-मतान्तर और भूख	13
मर्यादा पुरुषोत्तम श्री रामचन्द्र जी का जीवन चरित्र	15
बच्चों का चरित्र निर्माण क्यों और कैसे	18
बढ़ने विश्व फैशन का आधारःशाकाहार	22
गाय का घी एक श्रेष्ठ औषधि है	24
हंसो और हंसाओ	26
चुनौती	26
धैर्य से कठिनाईयों पर विजय	27
नवरात्रों में व्रत या उपवास-एक वैज्ञानिक चिंतन	29
पाकिस्तान में अल्पसंख्यकों की दशा	33
दान सूची	34

विज्ञापन दर

पिछला कवर पृष्ठ	5,100 रुपये
अंदर का कवर पृष्ठ	3,100 रुपये
पूरा पृष्ठ अंदर	2,100 रुपये
आधा पृष्ठ	1,100 रुपये
चतुर्थ भाग	600 रुपये

समस्त सम्पादक मण्डल अवैतनिक है। 'आत्मशुद्धिपथ' में व्यक्त लेखकों के विचारों से सम्पादक मण्डल का सहमत होना अनिवार्य नहीं है। किसी भी प्रकार के विवाद का न्यायक्षेत्र बहादुरगढ़, जि. झज्जर होगा।

thearyasamaj.org

स्वामी शक्तिवेश का बलिदान दिवस भी रहा बेटियों को समर्पित

वैदिक सत्संग मंडल समिति के तत्वाधान में स्वामी शक्तिवेश का 26वां बलिदान दिवस टीला मोहल्ला झज्जर में मनाया गया। इस अवसर पर 101 बेटियों ने आनन्द देव शास्त्री के नेतृत्व में यज्ञ सम्पन्न करवाया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि के रूप में बहादुरगढ़ के विधायक नरेश कौशिक पहुंचे। उन्होंने अपने संदेश में कहा कि स्वामी शक्तिवेश एक निर्भिक, साहसी, दृढ़ निश्चय के धनी थे। हमें उनके जीवन से प्रेरणा लेनी चाहिए और उनके आदर्श का पालन करना चाहिए। वहीं कार्यक्रम की अध्यक्षता कर रहे आत्म शुद्धि आश्रम बहादुरगढ़ के अधिष्ठाता व हाल ही में सीएम द्वारा सम्मानित स्वामी धर्ममुनि दुग्धाहारी ने कहा कि स्वामी शक्तिवेश ने गुरुकुल इंद्रप्रस्थ के अधिष्ठाता रहते हुए, राजस्थान प्रतिनिधि सभा के महामन्त्री व वैदिक आश्रम रिवाड़ी, गुरुकुल घासेड़ा में रहकर आर्य समाज का बहुत काम किया था। स्वामी श्रद्धानन्द पलवल ने कहा कि बेटी बचाओं अभियान का आर्य समाज ने हमेशा प्रचार किया है और नर तथा नारी की समता का पक्षधर रहा है। नारी माथे का मुकुट है। कार्यक्रम के दौरान भजनोपदेशक पंडित रमेशचंद्र कौशिक ने अपने मधुर भजनों से आर्य समाज की शिक्षाओं पर प्रकाश डाला। इस अवसर पर स्वामी रामानन्द सरस्वती, हरियाणा स्टेट फार्मेसी काऊंसिल के पूर्व रजिस्ट्रार डाक्टर अशोक नागपाल, प्राचार्य श्यामलाल, पंडित रमेश चंद्र कौशिक, जय भगवान आर्य, सूबेदार भरत सिंह, सुभाष आर्य, वेदप्रिय आर्य, सोमदेव शर्मा, आशा अत्री, मंजू सैनी, राव रतीराम, चंद्रपाल, फतेह सिंह भंडारी, चंद्रपाल, रमेश योगाचार्य, सत्यवीर प्रेरक, इंद्रजीत, संदीप सैनी आदि मौजूद रहे। इस अवसर पर भंडारे का भी आयोजन किया गया। अंत में बेटी बचाने व कन्या भ्रूण हत्या न करने की शपथ भी दिलाई गई और 101 बेटियों को सम्मानित भी किया गया।

फर्रुखनगर आश्रम का यज्ञ व मासिक सत्संग सम्पन्न

अखेराम सरदारो देवी आत्मशुद्धि आश्रम फर्रुखनगर गुड़गांव का मासिक सत्संग दिनांक 14 फरवरी 2015 को उत्साह और श्रद्धा के साथ सम्पन्न हो गया। सायं 3 बजे विक्रम देव शास्त्री, जी द्वारा यज्ञ सम्पन्न कराया गया। यजमान ईशमुनि जी रहे। विभिन्न यजमानों ने श्रद्धापूर्वक आहुतियां प्रदान की। स्वामी जी ने सामूहिक रूप से यजमानों को आशीर्वाद दिलाया। उसके बाद आचार्य रवि आर्य ने ऋषि जीवन के बारे में मधुरवाणी से प्रकाश डाला महाशय हरीशमुनि जी व रामदेव जी द्वारा सुमधुर एवं प्रेरणादायी भजनों का सुन्दर कार्यक्रम चला। तत् पश्चात् श्री जयनारायण जी वकील एवं योग शिक्षक देवेन्द्र जी ने अपने सुन्दर विचार रखे। स्वामी जी ने अपना प्रभावशाली व्याख्यान दिया और कहा हम सभी को लौकिक जीवन के साथ आध्यात्मिक जीवन भी जीना चाहिए। वानप्रस्थी ईशमुनि जी ने सभी का हार्दिक धन्यवाद किया। शान्तिपाठ के बाद प्रसाद वितरण हुआ।

वैवाहिक वर्षगांठ मनायी गयी

श्री विश्वनाथ जी आर्य अग्रवाल कालोनी बहादुरगढ ने आत्मशुद्धि आश्रम की पवित्र यज्ञशाला में दिनांक 21फरवरी को अपनी 31वीं वैवाहिक वर्षगांठ उत्साह पूर्वक मनायी। इस अवसर पर मध्याह्नोपरान्त 4.30 बजें आचार्य राजहंस मैत्रेय जी के ब्रह्मत्व में यज्ञ का आयोजन श्रद्धा और उत्साह के साथ किया गया। मुख्य यजमान श्री विश्वनाथ जी आर्य सपत्नीक अपने परिवार के साथ रहे। यज्ञोपरान्त स्वामी धर्ममुनि जी ने सामूहिक रूप से यजमानों को शुभकामनाओं के साथ आशीर्वाद दिलाया। ब्र. जयपाल, रामदेवजी ने सुन्दर भजन प्रस्तुत किये। आचार्य ज्ञानचन्द्र आर्य, आचार्य राजहंस मैत्रेय ने वैवाहिक जीवन के विभिन्न पहलुओं पर सार्थक प्रकाश डाला। उसके बाद स्वामीजी ने विश्वनाथ जी आर्य के जीवनपर प्रकाश डालते हुए आदर्श जीवन की झांकी प्रस्तुत की। जिसे सुनकर श्रोतागण प्रसन्न हो गये। परिवार की और से सभी के लिए सुन्दर भोजन की व्यवस्था की गयी। शान्ति पाठ के बाद परिवार की और से प्रसाद वितरण किया गया।

thearyasamaj.org

जन्म दिवस मनाया गया

श्रीमती रूक्मेश सांगवान धर्मपत्नी सुकर्मपाल सांगवान, सैक्टर-6, बहादुरगढ़ ने अपने धेवते आयुष्मान कनिष्क सुपुत्र श्रीमती सुजाता धर्मपत्नी श्री प्रदीप सिंह ढुल मुढाल भिवानी का दूसरा जन्म दिवस दिनांक 12.02.2015 को आत्मशुद्धि आश्रम बहादुरगढ़ के मुख्याधिष्ठाता स्वामी धर्ममुनि जी के सानिध्य में में अपने सभी परिचित एवं सम्बन्धियों के साथ यज्ञ, सत्संग, उत्साह और प्रसन्नता के साथ मनाया। इस अवसर पर स्वामी धर्ममुनि जी के सानिध्य में आचार्य राजहंस जी मैत्रेय ने यज्ञ सम्पन्न कराया। स्वामी जी ने सामूहिक रूप से यजमान परिवार और बालक कनिष्क को आशीर्वाद दिलाया। इस अवसर पर कन्या गुरुकुल लोवांकला की छात्राओं, श्री राम देव जी, वन्दना शास्त्री आदि ने सुमधुर भजन प्रस्तुत किये। इसके बाद मा. ब्रह्मजीत जी, मा. हरी सिंह जी, स्वामी रामानन्द, श्री सत्यपाल जी वत्स आदि ने अपने सुन्दर विचार रखते हुए बच्चे को अपना आशीर्वाद दिया। आचार्य राजहंस जी मैत्रेय ने माता-पिता को बच्चे के निर्माण में महती भूमिका अदा करनी चाहिए। इस विषय पर बल देते हुये कहा कि उन्हीं माता-पिता का जीवन सार्थक होता है। जो अपनी सन्तानों का निर्माण ठीक से कर जाते हैं। तत्पश्चात् स्वामी धर्ममुनि जी ने सांगवान परिवार की विशेषताओं पर प्रकाश डालते हुए परिवार को आदर्श जीवन बनाने के लिए प्रेरित किया। इस अवसर पर दोनों परिवारों के सगे सम्बन्धी उपस्थित रहे। मंच संचालन श्री राजवीर जी आर्य द्वारा प्रेरणाप्रद उद्धरण देते हुए कुशलतापूर्वक किया। शान्ति पाठ के बाद प्रसाद का वितरण हुआ। परिवर की और से सभी के लिए स्वादिष्ट प्रीति भोज की भी व्यवस्था विक्रम देव शास्त्री जी द्वारा की गयी।

वैवाहिक जीवन के 50 वर्ष पूर्ण होने पर स्वर्ण जयन्ती वैवाहिक वर्षगांठ बहुत ही उल्लासपूर्वक मनाई।

कार्यक्रम का प्रारम्भ वैदिक यज्ञ से हुआ। यज्ञ की ब्रह्मा आचार्या डा. उषा शर्मा 'उषसु' जी ने विधि विधान से यज्ञ कराया। इस अवसर पर एक मास से चल रहे सामवेद पारायण यज्ञ की पूर्णाहुति भी कराई। वहां उपस्थित जनसमूह ने श्री कन्हैया लाल आर्य जी एवं उनकी धर्मपत्नी श्रीमती चन्द्रवती आर्या को आशीर्वाद प्रदान किया। यज्ञोपरान्त डा. ओमप्रकाश जी पाली वालों ने सुन्दर भजन प्रस्तुत किये। आचार्य अखिलेश्वर जी ने अपने प्रवचन में गृहस्थ धर्म की चर्चा की।

इस अवसर पर श्री कन्हैया लाल आर्य एवं उनकी धर्मपत्नी श्रीमती चन्द्रवती आर्या को उनकी वैवाहिक स्वर्णजयन्ती पर स्वामी धर्ममुनि जी महाराज संचालक आत्मशुद्धि आश्रम बहादुरगढ़ एवं फर्रूखनगर, स्वामी प्रणवानन्द जी महाराज संचालक गुरुकुल गौतम नगर, आचार्य विजय पाल जी प्रधान आर्य प्रतिनिध सभा हरियाणा, श्री धर्मपाल आर्य प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा देहली, गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ के आचार्य, ऋषि पाल जी, आर्य प्रतिनिधि सभा हरियाणा के मन्त्री श्री रामपाल सिंह, आर्य केन्द्रीय सभा देहली के मन्त्री राजीव आर्य, सार्वदेशिक आर्य युवक, परिषद के अध्यक्ष, श्री अनिल आर्य, गुरुकुल कांगड़ी के कुलपति डॉ. सुरेन्द्र कुमार जी, आर्य तपस्वी जी, आचार्य राजहंस मैत्रेय, आचार्य सत्यवीर शास्त्री, आचार्य डॉ. सत्येन्द्र प्रकाश सत्यम, डॉ. धर्मपाल मैनी, जयदेव वानप्रस्थी, श्री देश बन्धुशास्त्री आर्य, केन्द्रीय सभा गुड़गांव के प्रधान श्री सोमनाथ जी, महामन्त्री भी प्रभु दयाल, श्री अशोक आर्य एवं मन्त्री श्री वीरेन्द्र सेतिया, श्री नरेन्द्र आर्य, श्री लक्ष्मण पाहूजा, श्री एस. के. रस्तोगी, श्री महादेव आर्य, श्री महेन्द्र प्रताप आर्य, श्री सुभाष गुगलानी, आचार्य डॉ. अशोक दिवाकर, आचार्य श्री पी.एन. मोंगिया, श्री ओम प्रकाश मनचन्दा, श्री सुखदेव कपूर, श्री सत्यपाल वत्स, श्री राजवीर आर्य, सहित सैकड़ों गणमान्य आर्य नर नारी उपस्थित थे। गुड़गांव कैमिस्ट एसोसिएशन के प्रधान श्री शरद मेहरोत्रा, महामन्त्री श्री नीरज जैन, कोषाध्यक्ष श्री अशोक अग्रवाल, कार्यकारी प्रधान, श्री राजेश आर्य, पूर्व प्रधान श्री जी.एस. पसरीचा, श्री चरणजीत अरोड़ा सहित सैकड़ों दवा विक्रेता एवं अधिकारी भी उपस्थित थे। इस अवसर पर श्री कन्हैया लाल आर्य द्वारा लिखित पुस्तक संजीवनी (एक प्रयास भक्ति की ओर) नामक पुस्तक का सार्वजनिक लोकार्पण किया गया। यह पुस्तक वहां उपस्थित जनसमूह को निःशुल्क प्रदान की गई। आत्मशुद्धि आश्रम बहादुरगढ़ एवं फर्रूखनगर के सभी सदस्य, कार्यकर्त्ता, ट्रस्टी एवं अधिकारीगण, श्री कन्हैया लाल आर्य एवं श्रीमती चन्द्रवती आर्या जी के इस वैवाहिक स्वर्णजयन्ती के अवसर पर हार्दिक प्रसन्नता व्यक्त करते हैं। परम पिता परमात्मा से प्रार्थना है कि श्री आर्य जी अपने परिवार सहित सुखपूर्वक अपना शेष जीवन व्यतीत करे।

thearyasamaj.org

वेद सन्देश

अतिथि-यज्ञ

- डॉ. रामनाथ वेदालंकार

त्वमग्ने प्रयतदक्षिणं नरं,
वर्मेव स्यूतं परिपासि विश्वतः।
स्वादुक्षद्मा यो वसतौ स्योनकृजक्,
जीवयाजं यजते सोपमा दिवः॥

ऋ 1.31.15

ऋषिः **हरिण्यस्तूपः आङ्गिरसः**। देवता **अग्निः**। छन्दः **विराड् जगती।**

(अग्ने) हे तेजस्वी परमेश्वर! **(त्वं)** तू **(प्रयतदक्षिणं)** पवित्र दक्षिणा देने वाले **(नरं)** मनुष्य को **(स्यूतं)** सिले हुए **(वर्म इव)** कवच के समान **(विश्वतः)** सब ओर से **(परिपासि)** परिरक्षित करता है। **(स्वादु-क्षद्मा)** स्वादु भक्ष्य और पेय वाला **(स्योन-कृत्)** (अतिथियों को) सुख देनेवाला **(यः)** जो **(वसतौ)** घर में **(जीवयाजे यजते)** अतिथि-यज्ञ करता है, **(सः)** वह **(दिवः उपमा)** द्यु-लोक के समान हो जाता है।

जब हमें शत्रु के आयुधों से अपने शरीर की रक्षा करनी अभिप्रेत होती है, तब हम सिला हुआ अभेद्य कवच शरीर पर धारण कर लेते हैं। उस कवच से टकराकर वैरी के बाण, भाले आदि शस्त्रास्त्र कुंठित हो जाते है। यहां वेद मनुष्य को एक अन्य कवच धारण करने की प्रेरणा कर रहा है, वह है दक्षिणा का कवच। हे अग्ने! हे तेजः स्वरूप परमात्मन्! तुम दक्षिणा देनेवाले नर की वैसे ही सब ओर से रक्षा करते हो जैसे कवच रक्षा करता है। पर कवच यदि ठीक प्रकार सिला हुआ तथा सुदृढ़ न हो, तो वह धारणकर्त्ता की रक्षा करने के स्थान पर स्वयं शत्रु के प्रहार से क्षत-विक्षत हो सकता है। इसी प्रकार दक्षिणा भी यदि पवित्र न हो तो वह दाता की रक्षा का साधन नहीं बनती। दक्षिणा में जो भोजन, वस्त्र, धन आदि दिया जा रहा है, वह शुभ साधनों से अर्जित हो तथा प्रसन्नता पूर्वक कर्त्तव्य मानकर दिया जा रहा हो, ऐसी पवित्र दक्षिणा ही चारों ओर विघ्नों से दाता की रक्षा करती है।

गृहागत अतिथि का सत्कार करना भी वैदिक मर्यादा के अनुसार गृहस्थ का एक आवश्यक कर्तव्य है। अतएव नैत्यिक पंच-यज्ञों में अतिथि-यज्ञ भी परिगणित किया गया है। जो अतिथि के घर आने पर स्वादु भोज्य, पेय आदि से सत्कृत कर उसे सुख देता है और जीवन-पर्यन्त अतिथि-यज्ञ करता रहता है, वह द्युलोक के समान उन्नत और प्रकाशमान हो जाता है। श्रुति कहती है कि विद्वान् व्रतनिष्ठ अतिथि जिसके घर आये, वह स्वयं उसकी सेवा में उपस्थित होकर कुशल क्षेम एवं उसकी आवश्यकताओं के विषय में पूछे। यहाँ तक कि यदि वह अग्निहोत्र करने के लिए तैयार हो और उस समय अतिथि आ जाए, तो वह अग्निहोत्र छोड़कर पहले अतिथि की सेवा में पहुंचे और उसकी स्वीकृति लेकर ही अग्निहोत्र के लिए बैठे।

हे सब यज्ञों के आदर्श अग्नि-स्वरूप परमेश्वर! तुम हमें भी दक्षिणा और अतिथि-यज्ञ के लिए सदैव प्रेरित करते रहो, जिससे हम भी एक दिन द्युलोक के सदृश उच्च, उदार, विशाल, प्रकाशमान और प्रकाशक होने के गौरव को प्राप्त कर सकें।

- वेद मञ्जरी से साभार

सम्पर्क करें

पारिवारिक अनुचित व्यवहारों से उत्पन्न मानसिक उद्विग्नता, वैमनस्य, ईर्ष्याद्वेष आदि में मनोवैज्ञानिक समाधान, वेद, दर्शन, उपनिषद गीता आदि साहित्य पर सुबोध व युक्ति पूर्ण प्रवचन वैदिक-यज्ञ तथा प्रभावोत्पादक ध्यान-योग साधना शिविरों हेतु सम्पर्क करें :

राजहंस मैत्रेय, मो. 9813754084

thearyasamaj.org

सम्पादकीय विश्राम की आवश्यकता है।

आज व्यस्त जीवन में विश्राम की बात करना अशोभनीय ही नहीं अपितु हास्यास्पद लगता है फिर भी मैं विश्राम की चर्चा करना उचित समझता हूं। कम से कम उन लोगो के लिए जो स्वयं को आत्म उपासक या आध्यात्मिक समझते हैं। अधिकांशत: जो लोग आध्यात्मिक मार्ग पर स्वयं को आरूढ मानते हैं उनमें बहुत से लोग विश्राम की गुणवत्ता से भी परिचित नही हैं, और जिन्हें विश्राम की गुणवत्ता का अनुभव नही हैं वे लोग न तो कर्मठ हैं न ही विश्राम में हैं, वो केवल व्यर्थ के तनाव में होते हैं। या फिर एक मशीन की तरह कार्य करते हैं। ऐसे कार्य की थोड़ी बहुत स्थूल लाभ की संभावना के अतिरिक्त आत्मिक विकास में कोई भूमिका नहीं होती। तनावपूर्ण व्यक्ति न तो स्वयं को प्रसन्न रख सकते हैं न ही दूसरो को। कर्मशील होना आवश्यक ही नही अपितु अनिवार्य गुणवत्ता है। बिना कर्म के मानव जीवन का समस्त सौन्दर्य बिखर जायेगा। ऐसे कर्म जो स्वयं के और दूसरो के जीवन में सौन्दर्य लाने की बजाय तनाव लाते हैं तो उन्हें करने की बजाय न करना ही श्रेष्ठतर है। कुछ लोग हैं जो जीवन की आवश्यक सुविधाएं एवं व्यवस्था बनाने में रात दिन लगे हुए हैं वें पूर्णतया ठीक हैं। परन्तु कुछ लोग हैं जिन्होनें जीवन के लिए आवश्यकता से अधिक धन एवं सुविधाएं जुटा ली हैं फिर भी वो धन या अपने अहं की तृप्ति के विस्तार में रात दिन संलग्न रहते हैं। साथ में उनका आध्यात्मिक होने का प्रचार प्रसार चलता रहता है ऐसे लोग न तो स्वयं जीते हैं और न ही दूसरो को जीने देते हैं। स्वयं भी घिसटते हैं और दूसरो को भी घसीटते हैं। धर्म के नाम पर इनका गोरख धंधा चलता है। इन्हें दूसरे सुखी व्यक्ति पसन्द नही आते। ऐसे लोगो में राजसिक वृति होने के कारण रात दिन दौड़ने की आदत बन जाती है। और वे दूसरो को भी व्यस्त रहने का सदैव उपदेश देते रहते हैं। ये कर्मठ होने का इतना गुणगान सुनना चाहते हैं कि यदि इनकी कर्मठता की कही उपेक्षा होती है तो वे नाराज हो जाते हैं। स्वयं की पागल कर्मठता को ही दूसरो के लिए मापदंड मानते हैं इसलिए वे सभी को गालिया देते हैं। या दूसरो को हीन समझते हैं। इनकी किसी खाली प्रसन्नचित्त व्यक्ति में कोई रूचि नहीं। ये उन बूढे लोगो को भी कोसते हैं जो कर्मठ नही हो सकते। ऐसे लोगो ने ही पूरे विश्व को सुधारने का ठेका ले रखा है। ये ही पूरे विश्व को सुधारेंगे सबकी चिन्ताएं उनके पास हैं। सब समाधान उनके पास हैं परन्तु अपने तनाव को दूर करने का उनके पास कोई समाधान नही है। आध एक घण्टा कहीं खाली रहने का अवसर मिल जाए तो खाली नही रह सकते। बैचेन हो जाते हैं या नींद की झपकियां लेने लग जाते हैं। या भगवान् की चर्चा करने लग जाए या भगवान् का भजन करने लग जाय तो शीघ्र ही नींद आ जाती है। ये लोग एक बीमारी से ग्रस्त होते हैं और ये बीमारी है दूसरो को सुधारने की व्यस्तता, चाहे कोई सुधरे या न सुधरे उन्हें सभी को सुधारना है। इनसे कोई सुधारता नही इसलिए ये लोग और दूसरो को ज्यादा दोष देते हैं। क्योकि ये सुधारना चाहते हैं और लोग सुधरते नही। विश्व मे ऐसे बहुत से आध्यात्मिक और सामाजिक संगठन कार्यरत हैं जो किसी भी तरह से दूसरो को सुधारने में कोई कसर नही छोड़ते यदि वे नही सुधरते तो उन्हें मार देते हैं। कुछ लोगो की योजना है कि साम दाम दण्ड भेद इन चारो नीतियों से हम सुधार कर रहेगें। ऐसे तथा-कथित पागल मानसिकता की कमी नही है। हमे यही सोचना है कि कहीं हम भी तो इसी पंक्ति मे नही आते, हमें जीवन को चलाने के लिए उन चीजों की आश्यकता होती है जिससे जीवन बेहतर बने। और उसके लिए कर्मशील होना आवश्यक है। लेकिन इतना कर्मशील न हों कि कर्मठता का ही अभ्यास हो जाए। और कर्मठता यान्त्रिकता में परिवर्तित हो जाए। कहीं ऐसा न हो कि कर्मठता जिसके लिए आवश्यक है वही खो जाए। हमें खूब भाग दौड़ करनी चाहिए पर इतनी नही कि जीवन दौड़ ही हो जाए और विश्राम का नामोनिशान मिट जाए। हम सारे दौड़े केवल इसलिए कि जहां हम हैं वहां पहुंच जाए। हम इतने व्यस्त हो जाए कि व्यस्तता हमें वहां पहुंचा दे जहां हम हैं। यदि जीवन भर व्यस्त रहे और वहां न पहुंचे जहां हम हैं तो ऐसी व्यस्तता का क्या लाभ। अत: कुल मिला कर हमें वहां विश्राम में हो जाना है जहां परम शान्ति व्याप्त हो जाती है उसी परम शान्ति का अनुभव ही स्वयं और संसार को रूपान्तरित करता है अन्यथा परस्पर आपा धापी दोषारोपण अकारण संघर्ष, झगड़े, मार-पीट, हत्याएं, और युद्ध आदि विषमताओं में जीवन चला जाता है। हमें कर्म में विश्राम और विश्राम में कर्म की गुणवत्ता का अनुभव करना होगा अन्यथा जीवन क्रम भयावह नहीं।

-राजहंस मैत्रेय

thearyasamaj.org

ब्रह्मविद्या का अधिकारी

–महात्मा ओममुनि

उपनिषद् काल का एक प्रसंग है। एक बार छः जिज्ञासु ब्रह्मचारी किसी ब्रह्मज्ञानी गुरु की तलाश में थे। खोज करते-करते हुए उन्हें ज्ञात हुआ कि उनका ब्रह्मज्ञान का समाधान महर्षि पिप्लाद कर सकते हैं। सभी छः जिज्ञासु हाथ में समिधा लेकर महर्षि पिप्लाद के पास पहुँचे। तब महर्षि पिपलाद ने उनसे कहा कि-**'भूयः एव तपसा, ब्रह्मचर्येण श्रद्धसर संवत्सर-संवत्स्ययं'**, यद्यपि आप लोग तपस्या करके, ब्रह्मचर्य का जीवन बिता कर तथा श्रद्धा-पूर्वक यहां आये हो, तो भी आप लोग मेरे आश्रम में एक वर्ष तक मेरे समीप साधना पूर्वक निवास करो। एक वर्ष के पश्चात् जैसा आप उचित समझें प्रश्न पूछ सकते हैं। अगर उन प्रश्नों का उत्तर या समाधान मैं जानता होऊंगा तो आपको अवश्य बतला दूंगा।

ऋषि पिप्लाद ने उन छः जिज्ञासुओ के तीन गुणों, 'तप, ब्रह्मचर्य और श्रद्धा' की बात कही। उन्हें अपने पास एक वर्ष तक रखकर उनके धैर्य, संयम के साथ वे ये भी देखना चाहते थे कि क्या उनके जीवन में-'तप, ब्रह्मचर्य और श्रद्धा' इन तीन गुणों का समावेश है या नहीं और तभी वे उन्हें ब्रह्मज्ञान देने को तैयार हुए।

आईए अब थोड़ा यह भी जानले कि ऋषियों के अनुसार तप, ब्रह्मचर्य और श्रद्धा है क्या। 'तप' का अर्थ है-शारीरिक साधना। ब्रह्मज्ञान के रास्ते पर जो चल रहा हो, उसे तपस्या से गुजरना आवश्यक है। क्योंकि ब्रह्मज्ञान का प्रथम साधन यह हमारा शरीर है। जिसका शरीर रोगी, निर्बल होगा, थोड़ी सी गर्मी-सर्दी सहन नहीं होगी, सिर दर्द, खांसी-जुकाम या बुखार हो जायेगा तब वह अध्यात्म के मार्ग पर कैसे चल सकेगा। उसे तो उसका शरीर ही हर समय सताता रहेगा। शरीर की चिन्ता से मुक्त होकर ही व्यक्ति साधना के पथ पर आगे बढ़ सकता है। ब्रह्मज्ञान की प्राप्ति कर सकता है। दूसरा है 'ब्रह्मचर्य'। यहाँ ब्रह्मचर्य का अर्थ है- विषय, वासनाओं से मुक्त होना अर्थात् मानसिक साधना। जिसका मन हर समय विषयों की तरफ भटकता फिरेगा, तब अध्यात्म के मार्ग पर कैसे चलेगा। उसका तो मन ही उसे प्रत्येक क्षण तंग करता रहेगा। अतः मन पर संयम करके, मन को वासनाओं से मुक्त करके ही व्यक्ति ब्रह्मज्ञान का अधिकारी बनता है।

शरीर और मन के साधन के बाद तीसरी बात आती है, 'श्रद्धा' की। मन जब संकल्प-विकल्प के जाल से बाहर निकल कर ब्रह्मज्ञान के लक्ष्य पर दृढ़ता से आरूढ़ हो जाता है, तब श्रद्धा की अवस्था प्रकट होती है। ऋषि कहते हैं कि ब्रह्मज्ञान प्राप्त करने के लिए मनुष्य की ये तीन अवस्थायें आवश्यक हैं। जब साधक तप, ब्रह्मचर्य और श्रद्धा के कारण ब्रह्मपर, ब्रह्मनिष्ठ तथा ब्रह्मान्वेषण के लिए उत्सुक हो जाता है तभी वह ब्रह्मज्ञान का अधिकारी बनता है। महर्षि पिपलाद का यही तो कथन है-**'भूयः एव तपसा, ब्रह्मचर्येण श्रद्धसर संवत्सर-संवत्स्ययं'**, यद्यपि आप लोग तपस्या करके ब्रह्मचर्य का जीवन बिता कर श्रद्धापूर्वक आये हो, तो भी एक बार और एक वर्ष के लिए मेरे पास निवास करो। बस **'तप, ब्रह्मचर्य और श्रद्धा,'** यही एक मात्र उपाय है, रास्ता है, ब्रह्मज्ञान प्राप्ति का। इसके अतिरिक्त **'नान्यः पन्था विद्यतेऽयनाय।'**

-त्यागी कूटीर, गा.डा. शेखपुरा,
तहसील-हाँसी, जिला-हिसार (हरियाणा)

साधना के इच्छुक सम्पर्क करें

आत्म-शुद्धि-आश्रम' बहादुरगढ़ में आधुनिक ढंग से शौचालय, रसोई, स्नानगृह आदि से सुसज्जित कमरे साधक-साधिकाओं के लिए उपलब्ध हैं। यहाँ की विशेषता आश्रम में दोनों समय यज्ञ-उपदेशादि, पुस्तकालय, निकट अस्पताल व्यवस्था, एकान्त-शान्त वातावरण। आश्रम "दिल्ली के अन्दर- दिल्ली से बाहर"। रेल-बस आदि की चौबीस घण्टे सुविधा। इच्छुक साधक- साधिकायें सम्पर्क करें।

–व्यवस्थापक, दूरभाष: 01276-230195 चलभाष: 9416054195

thearyasamaj.org

मानव जीवन का परमादर्श संन्यास

- सुमेरू प्रसाद, दर्शनाचार्य

असाधु-महाराज! किसकी प्रतीक्षा में पड़े हो? किसकी आशा लगाए बैठे हो? कौन आने वाला है? अथवा किसी पर घात लगाए बैठे हो? किसी पर आक्रमण करना है?

साधु- ऐसा कुछ भी नहीं है।

असाधु-पुनः इस फटेहाली से यहाँ क्या कर रहे हो? निज बुद्धि पर, समाज पर, राष्ट्र पर, भगवान पर क्यों अत्याचार कर रहे हो? किसी के कुछ काम क्यों नहीं आ रहे, किसी को कुछ देते क्यों नहीं हो?

साधु-औरों को देने के लिए हमारे पास बचा क्या है?

असाधु- तो जंगली जानवरों की तरह क्यों अलग-थलग पड़े हो, उपार्जित क्यों नहीं करते? अमूल्य मानव जीवन मिला है ले रहे हो इसका दुर्लभ आनन्द? या लुक छिपकर कहीं भी काट लो इस जीवन को, अपनी कमाई है दूसरे का अधिकार ही क्या है कुछ कहने का?

साधु-घनघोर जीवन से बाधित हो रहे थे, अपेक्षाएँ पूरी नहीं हो पा रही थी, निकलना पड़ा।

असाधु-जैसे तैसे निकल तो पड़े उपकार के लिए समाज में किन्तु रोना इस बात का है कि परार्थ नहीं।

साधु- अब जीने के लिए वहीं जाना नहीं है। यदि पहले वहाँ नहीं जी सकते तो अब कैसे जी पाएंगे। अतः अब केवल एक जगह आत्मकल्याण का उपाय सोच रहा हूँ।

असाधु-संसार छोड़कर आज जंगल में जाने की क्या आवश्यकता है? संसार में रहते हुए आत्मज्ञानी बन सकते हैं। इस बात को आज विज्ञान ने सिद्ध कर दिया है कि संसार में रहते हुए प्रत्येक विषय में तत्त्वज्ञान हो सकता हैं। बड़े-बड़े वैज्ञानिक इसके उदाहरण हैं। वे सब संसार में ही तो उत्पन्न हो रहे हैं। यदि संसार में रहते हुए आत्मज्ञान नहीं हो सकता है तो क्या जंगल में ज्ञान के पेड़ होते हैं जिसके नीचे बैठने मात्र से आत्मज्ञान हो जाएगा?

साधु- क्या जंगल संसार से बाहर है?

असाधु- मेरा अभिप्राय है कि गृहस्थाश्रम में रहते हुए, घर से सम्बद्ध रहते हुए, लौकिक भोगों को भोगते हुए आत्मज्ञान हो सकता है, आत्मज्ञान के लिए उन्हें छोड़ने की कोई आवश्यकता नहीं है?

साधु- यदि ऐसा माने तो वैदिक धर्म में आश्रम व्यवस्था के अन्तर्गत शास्त्रविहित वानप्रस्थ और संन्यास आश्रम का विधान व्यर्थ हो जाएगा।

असाधु-उन शास्त्रों के बनाने वाले कोई बुद्धिमान तो लगते नहीं हैं। होंगे कोई रोटियों का मुहताज, आलसी, प्रमादी, निकम्म, आँख बन्द करके पड़े-पड़े ऊँघने वाले, कामचोर। काम करते समय सोचते होंगे क्यों चमड़ी जलाएं। परन्तु अन्दर होंगी वासना विशाल। तब सर्वथा चुप भी कैसे बैठ सकते थे! और जब पेट में चूहे कूदने लगते होंगे तो बुद्धि खुलती होगी। पुनः माल मारने के लिए हाथ मलते-मलते धनिकों को लूट लेने का अच्छा उपाय ढूँढ निकाला। ये काले कागज वे ही हथकंडे मात्र हैं और कुछ भी नहीं। जो भी हो ऐसे लोगों के बनाये हुए वानप्रस्थ और सन्यास के विधान सार्थक हो या निरर्थक, हमारा कथन है कि गृहस्थ में आत्मज्ञान हो सकता है तो उसे छोड़कर अन्यत्र क्यों ठोकरें खाते फिरें?

साधु-लगता है अब यह संसार धार्मिक, आस्तिक, सत्यवादी पुरुषों के रहने का स्थान नहीं रहा, यहाँ तो केवल परले किनारे के अविवेकी, स्वार्थी, धूर्त, छली-कपटी, पाखण्डी और दुरात्मा ही रह गए हैं जो अपना प्रयोजन सिद्ध करने के लिए अच्छे से अच्छे को भी बुरे से बुरा बताने में कोई संकोच नहीं करते। अन्धे के न दिखाई देने से फूलों में रंग नहीं होता, यह तो नहीं माना जा सकता है। वस्तुतः शास्त्रों को केवल बुद्धिमान ही समझ पाते हैं, वहाँ मूर्खों के लिए अंगूर खट्टे ही होते हैं। यह मानना आवश्यक है कि अच्छा, बुरा, कठिन, सरल, ग्राह्य, त्याज्य का परिज्ञान शास्त्रों से ही संभव है, केवल दम्भी, द्वेषी मूर्खों के मुँह फाड़ने मात्र से ही शास्त्र अशास्त्र नहीं हो सकते हैं। शिष्टों, अनुभवियों बड़ों के वचन आज भी प्रमाण होते हैं। उन्हीं के अनुशासन पर व्यवहार टिका हुआ है।

असाधु-जीवन में धन, परिवार के सिवाय और क्या है? धन है तो जीवन है, परिवार है तो सुरक्षा है। यदि इन दोनों का ही त्याग कर दिया जाए तो जीवन में और क्या बच जाता है?

thearyasamaj.org

साधु-तृप्ति, स्वतन्त्रता और निर्भयता जीवन की परम आवश्यकता है। जहाँ और जिनसे ये उपलब्ध होते हैं वे ही वास्तविक धन और परिवार हैं। केवल लौकिक धन व परिवारों से किसी को इनकी पूर्ति नहीं हो सकती है। यदि ऐसा नहीं होता तो बड़े-बड़े राजा, ऐश्वर्य सम्पन्न विद्वान् लोक को लात मारकर जंगल नहीं जाते।

असाधु-यह तो सभी मानते हैं कि गृहस्थाश्रम समस्त सुविधाओं का भण्डार है। कोई भी साधन यहां सरलता से और पर्याप्त मात्रा में सदा सुलभ रहते हैं। जंगल में सूखे पत्ते, घास-पात की जड़े और अनगढ़े पत्थर के अतिरिक्त और क्या मिल सकते है? अत: सुविधाओं के बल पर ज्ञानार्जन भी सरलता से संभव है?

साधु-कार्य की सिद्धि में केवल साधनों की बाढ़ आवश्यक नहीं है अपितु बाधकों का निवारण भी अनिवार्य हैं?

असाधु-यह तो ठीक बात है। परन्तु साधनों के अभाव को ही तो बाधा कहते हैं। प्रकाश का अभाव ही अन्धकार है जहां कार्य करना सम्भव नहीं होता हैं?

साधु-किसी के उत्तम कार्यो की प्रशंसा न करके चुप रहने को गाली देना नहीं कहते हैं। अपितु उल्टे-सीधे अपशब्द सुनाने का नाम गाली है। वैसे ही चुप रहना बाधक है क्योंकि इससे सामाजिक सहयोग की हानि होती है। लोक में अपयश होने से व्यवहार में बाधा होती है। प्रशंसा साधन है क्योंकि उससे लोक में प्रतिष्ठा होती है। जिससे सुविधा के अवसर उपलब्ध होते हैं। अत: अभाव मात्र का नाम बाधा नहीं है। व्यक्ति में रागादि क्लेश जन्म जात होते हैं जो कि तत्वज्ञान के विरोधी हैं। घर में रहते हुए उनका छूटना अत्यन्त दुष्कर है। घर से पृथक् हो जाने पर इनको छोड़ना सरल हो जाता है। रागादि क्लेशों के रहते हुए आत्मज्ञान होना असंभव हैं। अत: घर में रहना बाधक है।

असाधु-आज सर्वत्र इसी विचारधारा का प्रचार हो रहा है। स्वयं वैदिक धर्मी साधु-सन्त और यहां तक कि आर्य समाज के अनेक विद्वान् भी यही उपदेश करते हैं कि घर से बाहर जाने की कोई आवश्यकता नहीं है?

साधु-जो ऐसा कहते हैं उनके विचार तुच्छ हैं। सच के प्रति उनमें कोई सहानुभूति नहीं, आदर्शो के प्रति उनका कोई प्रेम नहीं होता है। उनकी बातें मुँह देखी हैं। शास्त्र और वैदिक आदर्श के विरूद्ध होने से कभी मान्य नहीं हो सकती। संभवत: वे संसारियों को हास-विलास और विषयानन्दी जीव समझते हैं अत: अपना उल्लू सीधा करने के लिए उनके सामने उनकी मनचाही बातें बनाते रहते हैं। वे मानते होंगे कि भला ये मर्त्यलोक के कीटाणु मोक्षसुख को कहां से समझ सकेंगे, इनके लिए तो यह हाड़-मांस और घास-पात का कचरा ही पर्याप्त है।

साधु-आर्यो की जनसंख्या वैसे ही घटती जा रही है, यदि इस ओर ध्यान नहीं दिया गया और सब लोग जंगल जाने की तैयारी में लग जाएंगे तो यज्ञ-दानादि कर्मकाण्डों की रक्षा कौन करेगा? जंगल में भी विधर्मी आतंकवादियों से वे सुरक्षित रह सकेंगे इसकी क्या आशा है?

साधु- त्याग, वैराग्य, ज्ञान, सम्पन्न समर्थो का कार्य आगे-आगे चलते हुए नेतृत्व करने का है। आदर्शो को सुरक्षित रखना उनका धर्म है। सभी एक साथ समर्थ नहीं हो सकते हैं। अत: जो पीछे रह जाएंगे वे अपना कर्त्तव्य निभाते रहेंगे। आदर्शो के अभाव में नई पीढ़ियां समाप्त हो जाती हैं जिनकी सुरक्षा पूर्वोक्त समर्थो से ही संभव है। आर्यो के न्यूनता में त्याग, वैराग्य, ज्ञान, सम्पन्न समर्थ आदर्शो का

आश्रम द्वारा प्रकाशित महत्त्वपूर्ण साहित्य अवश्य पढ़ें

यज्ञ समुच्चय	मूल्य : 50 रु.
वैदिक सूक्तियों पर दृष्टान्त	मूल्य : 25 रु.
स्वस्थ जीवन रहस्य	मूल्य : 20 रु.
फल-सब्जियों द्वारा रोग नष्ट	मूल्य : 20 रु.
आत्मशुद्धि के सरल उपाय	मूल्य : 15 रु.
विद्यार्थियों के लाभ की बातें	मूल्य : 15 रु.
वृहद् जन्मदिवस पद्धति	मूल्य : 20 रु.
चाणक्य-दर्पण	मूल्य : 25 रु.
कल्याण-पथ	मूल्य : 20 रु.
प्राणायाम-विधि	मूल्य : 10 रु.
स्वादिष्ट प्रयोग चतुष्टय	मूल्य : 15 रु.

प्राप्ति स्थान : आत्मशुद्धि आश्रम बहादुरगढ़, जि. झज्जर (हरियाणा) पिन-124507

दूरभाष : 01276-230195 **चलभाष** : 09416054195

thearyasamaj.org

अभाव ही कारण है जिसकी पूर्ति भी आर्यों के लिए अत्यन्त आवश्यक है।

असाधु-साधु महात्मा सबके सब मन के काले होते हैं। एड़ी से चोटी तक राग-द्वेष से भरे हुए, दुगुर्णा के ढेर होते हैं। जितने को भी देखा एक-दूसरे से बढ़-चढ़कर निकले। अन्यों की तरह वे भी अन्दर से संसारी ही होते हैं, उनमें कोई विशेषता तो होता नहीं है। जब कभी मिलने जाओं तो पहले तो बात ही नहीं करेंगे। मुँह फेर लेंगे। परन्तु अन्दर ही अन्दर घूरते रहेंगे। जब पता लगा लेंगे कि यह कोई गांठ का पूरा है तो बार-बार उसके सामने से निकलेंगे और दिखाएंगे कि हम ही ज्ञान और वैराग्य के पुतले हैं। जीवनमुक्त, पूर्ण निष्कलंक, निष्पृह, सन्तुष्ट भक्तवत्सल हैं। मानो उनका हृदय दया से छलछला रहा हैं। चरण छूते ही भक्त को सीधे मुक्ति में भिजवा देंगे। वस्तुतः उनका त्याग केवल पुरुषार्थ हीनता को छिपाने की श्वेत चादर, उपदेश केवल भोले भक्त हिरण को फंसाने का सुमधुर संगीत, वेश केवल माल बटोरने के जाल मात्र होते हैं। कितने तो उच्छृंखल और चरित्रहीन तक होते हैं।

साधु- ऐसे भी तो महात्मा हुए हैं जिनके दर्शन मात्र से ही जाने कितनी आत्माएं तृप्त हो जाती गई। कितने ही भग्न हृदय को ढ़ाढ. से मिला। कितने ही उनके आशीर्वाद से सन्मार्ग पर आरूढ़ हो गए हैं। जब मोह-माया, चिन्ता, शोक के कीचड़ में धसी आत्माएं डूबने लगती है, अपने आप को निकालने के लिए पुकार करने लगती हैं तो उनका उद्धार करने के लिए कौन आगे आता है? अन्ततः विरक्त मनीषी सज्जन चरण शरण में ही जाकर संसार को शान्ति सुलभ हो पाती है।

यह ठीक है कि जो साधुत्व से वंचित है। शील, समृति, सदाचार, सेवा, दया, विनय, विवेक आदि सद्गुणों से शून्य है। अध्यात्म ज्योति से उसका हृदय आलोकित नहीं हो पाया है पुनरपि माया परित्याग का स्वांग भरकर अपनी कुत्सित कामनाओं को तृप्त करता है। छिप-छिप कर कृप्या करता है तो समझना चाहिए कि उससे बढ़कर कोई नराधम धरती पर नहीं है। वह मानव तो क्या बाघ-भेड़िये से भी आगे जा चुका है। हृदय की कालिमा उसके मुँख पर प्रसन्नता की किरण कैसे फूटने देगी?।

असाधु- तो आपके विचार से हम गृहस्थियों को घर-परिवार, मकान-दुकान, खेत-खलिहान, नौकरी-धंधा फला-फूला व्यापार छोड़कर दाढ़ी-झोंटा बढ़ाकर कपड़े रंगवाकर, दण्ड-कमण्डलु हाथ में लेकर गली-गली में भीख मांगने आरम्भ कर देना चाहिए?

साधु-हम नहीं चाहते हैं जिसको तैरना नहीं आता वह वह भी धारा में कूद पड़े।

असाधु-मैं तो साफ समझता हूँ यदि मन में चोर है, हृदय में कालिमा है तो लाख बार गंगा नहा लो, हजारों बार व्रत, उपवास, तीर्थ, परिक्रमा कर लो शान्ति मिलने वाली नहीं है, उद्धार होने वाला नहीं है। इसके विपरीत जिसका मन शुद्ध है वह किसी भी स्थिति में रहे एक दिन मुक्त हो जाएगा। इसलिए संसार में रहो मगर इसमें डूबो मत। जल में कमल की भांति रहो, आसक्ति मत रखो। मन चंगा तो कठौत में गंगा। अतः सन्यास-वन्यास केवल पाखण्ड है, धोखा है। अपने जीवन के साथ अन्याय है।

साधु-किन्तु घर में रहने से ही मन का चोर भाग जाएगा, हृदय की कालिमा धुल जाएगी, नगरपालिका के नल के नीचे बैठकर नहा लेने से, झूठ छल-कपट करते रहने से, हाड़-मांस, मुर्दे खाते-पीते-चबाते, राग-द्वेष, दंगा-फसाद में उलझे रहने से शान्ति मिल जाएगी, उद्धार हो जाएगा?

असाधु-गृहस्थियों को सुखी-सन्तुष्ट देखकर आपको ईर्ष्या क्यों होती है, साधु महात्माओं को यह शोभा नहीं देती। क्या आपको शान्ति प्राप्त करने का और कोई मार्ग दिखाई नहीं देता?

साधु-यदि बूढ़े असमर्थ गृहस्थ भी इस संसार को छोड़ना नहीं चाहते, इसी से चिपटे रहना चाहते हैं इसे ही अपार आनन्द का सागर समझ रहें हैं तो समर्थ युवाओं को क्या पड़ा है कि वे त्याग और संयम की विपत्ति मोल ले? दुर्लभ आनन्द के अवसर की प्रतीक्षा में अपना समय गवांकर अपनी मूर्खता सिद्ध करें? इन्हीं भोगों में आकण्ठ डूबकर क्यों नहीं जीवन की कृतकृत्यता मनायें?

वस्तुतः व्यक्ति आदर्श का पुजारी होता है। मर्यादा का संरक्षण चाहता है। पूज्यों का अनुसरण चाहता है। यदि भोगवाद आदर्श आदर्श रहा तो कभी भी त्याग और संयम का पाठ नहीं पढ़ाया जा सकता है। हां त्यागवाद का आदर्श लेकर भोगवाद की सीमा बनाई जा सकती है। इसके लिए सर्वथा अनिवार्य है और संन्यास बिना गृहत्याग के संभव नहीं है।

असाधु- ठीक है मैं रास्ता भटक गया हूँ, अपना

thearyasamaj.org

कोई लक्ष्य नहीं रहा, जिसकी खोज थी अब तक नहीं मिला न मिलने की आशा रही। अन्धेरे में चक्कर काट रहा हूँ। सब ओर से विवश हूँ किन्तु आपको मेरे पीछे चलना चाहिए। मेरे साथ आओ नहीं तो घसीटूंगा। अब भी क्यों आप अन्य मार्ग पर जाना चाहते हो?

साधु-क्या मिला आपको? क्या सारा जीवन आशा में यों ही बीत नहीं गया? जीवन असफल नहीं रहा? जिसे पाने की लालसा थी कभी उसका कोई किनारा हाथ लगा? नहीं,

तो क्यों हमें भी अपने साथ घसीटना चाहते हो? क्यों हमें अन्धेरे में भटकाना चाहते हो? अपनी तरह हमें भी क्यों निराश करना चाहते हो? क्यों नहीं हमें उस मार्ग पर जाने देते जिस पर हम अपने लक्ष्य को प्राप्त कर सकते हैं, जीवन को सफल बना सकते हैं, पूर्णमनोरथ हो सकते हैं।

असाधु-तो ठीक हैं अब हमें भी दीक्षा दे दो।

साधु- जैसा आप समझ रहे हैं यह कोई बच्चों का खेल नहीं इसके लिए तो योग्यताएँ बनानी पड़ती हैं। वैसे भूल मत कर देना।

असाधु-अच्छा इसके लिए भी योग्यता चाहिए। क्या है वह योग्यता बतायेंगे?

साधु-हाँ-हाँ सुनो!

संन्यास की योग्यताएं

- यदि समाज में आपकी इतनी प्रतिष्ठा नहीं बन पाई कि लोग आपको जीने के लिए दो रोटी दे सकें, रोग-विपत्ति में सेवा कर सकें, तो आप घर मत छोड़ देना।
- आपकी इतनी आन्तरिक योग्यता नहीं बन सकी कि जिससे आप अपने परिवार-कुटुम्ब के बिना, उनसे पृथक होकर भी जीवन-यापन कर सकें, तो आप घर मत छोड़ देना।
- यदि आप में इतनी सहन-शक्ति नहीं कि सच्चे ईश्वर की भक्ति के लिए सम्पूर्ण प्रतिकूलताओं को झेल सकें, तो आप घर मत छोड़ देना।
- क्या सब कार्यों से बचने के लिए, दूसरों के ऊपर सर्वथा भारभूत होने के लिए ही सन्यास ग्रहण करना चाहेंगे?

ध्यान रखों

जब तब यह लगे कि घी, दूध, शाक, मिष्ठान, पकवान के बिना कैसे काम चलेगा? तब तक सन्यास मत लेना।

- जब तक यह लगे मेरे बिना इनका काम कैसे चलेगा? तब तक संन्यास मत लेना।
- जब तक सेवा-सुविधा का अभाव खटकता रहे, तब तक संन्यास मत लेना।
- जब तक वासनाएं बाधित करें, तब तक संन्यास मत लेना।
- जब तक प्रसन्नचित, निर्भय, निर्द्वन्द्व होकर धर्म-संस्थापन की सामर्थ्य न जाए, तब तक संन्यास मत लेना।
- लोग घर परिवार छोड़ देते हैं आजीवन ब्रह्मचर्य व्रत ग्रहण कर लेते हैं। वानप्रस्थ बन जाते हैं यहां तक कि संन्यासी बन जाते हैं परन्तु तब ईश्वर से विमुख ही रहते हैं। स्वयं को भक्त नहीं बना पाते हैं। जीवन में साधना का प्रवेश होने नहीं देते हैं। अब भी उनका लक्ष्य संसार ही होता हैं। साधनों में भेद कर लेते हैं। पहले निजी व्यवसाय कर रहे और लोभ संग्रह लोभ रक्षा कर रहे थे अब परोपकार कर रहे हैं परन्तु उपार्जन उसी का ही कर रहे हैं। आत्मकल्याण की भावना अभी प्रकटित नहीं हुई, ईश्वर प्राप्ति की अभी भी तड़प नहीं हुई। अतः ऐसे लोग विश्वास के योग्य नहीं होते हैं।

मान लो अब ओखली में सिर दे ही दिया, धधकती आग में कूद ही पड़े तो चिन्ता मत करो, उपर्युक्त योग्यताएं बनाकर ईश्वर को पा लो, सब ठीक हो जाएगा।

– दर्शनयोग महाविद्यालय, रोजड़, गुजरात

साधकों के लिए स्वर्णिम अवसर

अखेराम सरदारो देवी आत्मशुद्धि आश्रम फर्रुखनगर गुड़गांव में दूषित वातावरण से दूर सुरम्य स्थान पर आधुनिक सुविधाओं से सुसज्जित शौचालय, रसोई स्नानगृह आदि से युक्त योग-साधकों की साधना के लिए बाहर एवं भूमिगत कमरे उपलब्ध हैं। आप सादर आमन्त्रित हैं।

कृपया सम्पर्क करें:- 9416054195, 9812640989, 9813754084

thearyasamaj.org

धर्म, मत-मतान्तर और भूख

- मनमोहन कुमार आर्य

धर्म और भूख में क्या परस्पर कोई सम्बन्ध है? हां, अवश्य है, कम से कम भारत में तो रहा है और अब भी है, ऐसा स्पष्ट प्रतीत होता है। धर्म दो प्रकार के हैं एक तो वास्तविक, यथार्थ या सत्य धर्म है जो संसार के सभी लोगों के लिए एक समान है, इसलिए वह सबका एक ही है। सभी शुभ गुणों को धारण करना ही मनुष्य-धर्म है। यह शुभ गुण कौन-कौन से हो सकते हैं? विचार करने पर ज्ञात होता है कि ईश्वर को जानना, उसके सत्य स्वरूप का चिन्तन, उसका गुणगान व उससे सहायता की मांग करना, पर्यावरण को शुद्ध रखना व उसके लिए यज्ञ-अग्निहोत्र आदि करना, जीवित माता-पिता-आचार्यों का सेवा-सत्कार-श्राद्ध-तर्पण कर उन्हें प्रसन्न व सन्तुष्ट रखना, सत्य बोलना, दूसरों का हित करना, कृपण, वृद्ध, असहायों व पीड़ितों की सेवा, परोपकार करना, अविद्या का नाश, विद्या की वृद्धि, सबको आदर देना व करना, क्रोध न करना, असत्य न बोलना, स्वार्थ से ऊपर उठकर सबके हित में अपना हित समझना, दूसरों की उन्नति में बाधक न बनकर साधक बनना व सबकी उन्नति में अपनी उन्नति समझना, अपनी शारीरिक, सामाजिक और आत्मिक उन्नति करना, देश हित के लिए कार्य करना आदि शुभ-गुण मनुष्य धर्म कहे जा सकते हैं।

इस सत्य धर्म से इतर मत, मतान्तर, पन्थ, सम्प्रदाय, रिलीजन, मजहब, गुरूडम आदि हैं जो स्वयं को भी धर्म नाम से प्रचारित करते हैं। इन मतों व सम्प्रदायों की स्थापना व आविर्भाव किसी एक ऐतिहासिक पुरूष से देश-काल-परिस्थिति के अनुसार हुआ था जब सर्वत्र अज्ञान व अविद्या छाई हुई थी, समाज में अज्ञान, अन्याय व शोषण आदि विद्यमान था। देश व काल के अनुसार ही इनकी मान्यतायें व सिद्धान्त हैं जो अच्छे भी हैं व कुछ आज के आधुनिक समय में अप्रसांगिक व हितकर प्रतीत नहीं होते। उनका संशोधन होना चाहिये परन्तु प्रायः सभी मतों में अपनी मान्यताओं, सिद्धान्तों व कर्मकाण्डों में सुधार व संशोधन किये जाने की व्यवस्था नहीं है। इसका एक कारण यह भी है कि जिन लोगों के हाथों में इनकी बागडोर है, धर्म सुधार का कार्य करने से उनके हितों को हानि होने की सम्भावना है। लगभग दो अरब पुरानी मानव सभ्यता व संस्कृति में एक हजार से दो-तीन हजार पूर्व अस्तित्व में आये मत-मतान्तर अपनी मान्यताओं आदि को शाश्वत मानते हैं, यह सबसे बड़ा आश्चर्य है। देश की स्थिति भी ऐसी है कि उसमें सबको स्वतन्त्रता का अधिकार है जिसके नाम पर लोग असत्य व अनुचित बातों पर टीका टिप्पणी करने से बचा करते हैं। इनमें से अधिकांश मतों का यदि इतिहास देखें तो इन्होंने अपने प्रचार व प्रसार के लिए छल, कपट, झूठ, अविद्या, दम्भ, लोभ, सेवा, हिंसा आदि का सहारा लिया है। मनुष्य का सबसे बड़ा निजी धर्म अपने प्राणों वा जीवन की रक्षा है। जब किसी के प्राणों पर बन आती है तो लोग धर्म-कर्म कुछ नहीं देखते। अतीत में ऐसा ही हुआ है। आज जितने भी मत-मतान्तर हैं उनमें कहीं न कहीं इन धार्मिक कृत्यों का सहारा लेकर अपनी-अपनी संख्या को बढ़ाया गया है। आज महर्षि दयानन्द के प्रभाव से लोग अपने मत की प्रशंसा अधिक नही कर पाते हैं। अच्छाईयां व बुराईयां सभी मतों में हैं। वह अपनी कुछ अच्छाईयों का बखान कर आत्म-तुष्टि कर लेते हैं परन्तु परस्पर विवाद के विषयों पर मौन साध लते हैं।

महर्षि दयानन्द का जीवन इनसे बिलकुल विपरीत था। उन्होंने उन मुद्दों पर विचार कर समाधान ढूंढा जो सर्वाधिक विवादास्पद थे। उदाहरण के लिए, क्या मूर्तिपूजा सत्य है? क्या अवतारवाद और फलित ज्योतिष सत्य है? क्या सामाजिक असमानता तथा स्त्री व शूद्रों को विद्या व अध्ययन से वंचित रखना उचित है? क्या सती प्रथा, विधवाओं पर अत्याचार, बेमेल विवाह, जन्मना जाति व्यवस्था उचित है? उन्होंने स्त्री व पुरूषों की समानता की बात कही और कहा कि सबको मर्यादित जीवन व्यतीत करना चाहिये। उन्होंने योग, समाधि, वेदाध्ययन, साधना आदि से जो सत्य व यथार्थ उत्तर प्राप्त किये उनका मौखिक प्रचार किया और धर्म-प्रेमियों के निवेदन करने पर सत्यार्थ प्रकाश, ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका, ऋग्वेद, यजुर्वेद, संस्कृत, हिन्दी,

thearyasamaj.org

भाष्य, संस्कार विधि, व्यवहारभानु, गोकरुणानिधि आदि अनेक ग्रन्थ भी लिखे जिनकी सहायता से सत्य धर्म का निर्धारण होता है। आज भी इन ग्रन्थों को पढ़कर मनुष्य तर्क व युक्ति प्रमाणों से स्वधर्म को जानकर अपने जीवन के उद्देश्य को जानने के साथ उसे सिद्ध व सफल भी कर सकता है। उनकी शिक्षायें, मान्यतायें व सिद्धान्त सार्वभौमिक वा नदपअमतेंस हैं। सत्याचार, परोपकार, सेवा, ब्रह्मचर्य का पालन, निःस्वार्थ जीवन, अंहिसा, सभी प्राणियों की रक्षा ही धर्म है तथा मांसाहार, मदिरापान, धूम्रपान, जुआं, व्यभिचार आदि से बचना चाहिये क्योंकि उनके अनुसार यह धर्म नहीं अपितु अधर्म या पाप कर्म हैं। अधिक सुख-सुविधा एवं भोग प्रधान जीवन भी इस जन्म व परजन्म में दूखों का कारण बनता है, ऐसा उनके विचारों का अध्ययन करने से ज्ञान होता है जो कि उचित ही हैं।

भूख सभी मनुष्यों को प्रतिदिन प्रातः, दिन व सायं समय में लगती है। यदि भूखे को समुचित भोजन न मिले तो वह दुखी हो जाता है। वह भोजन के लिए प्रयास करता है। यदि उसे भोजन प्राप्ति के साधन नहीं मिलते तो वह दूसरों से सहायता मांगता है। भिक्षा मांगना भी इनमें से एक तरीका हो सकता है। यह देखा जाता है कि देशी-विदेशी मत-मतान्तर व मजहब के लोग जिनके पास प्रचुर धन व साधन होते हैं, उनमें जो अपने धर्मावलम्बी बन्धुओं की संख्या बढ़ाना चाहते हैं वह व उनके धर्म-प्रचारक ऐसे ऐसे स्थानों पर जहां निर्धनता, गरीबी व भूख हैं, पहुंच जाते हैं। लोगों को भोजन व दवा आदि बांटते हैं और उनके लिए चिकित्सालय व विद्यालय खोलते हैं और उसकी आड़ में उनका धर्म परिवर्तन कर अपने मत में सम्मिलित कर लेते हैं। भारत का विगत कुछ शताब्दियों का इतिहास ऐसी घटनाओं से भरा पड़ा है। आज इस प्रकार की घटनायें कुछ कम तो अवश्य हुई हैं परन्तु हमें लगता है कि समाप्त नहीं हुई हैं। यह सब काम योजनाबद्ध तरीके से किये जाते हैं। इसके पीछे सुदृढ़ संगठन होते हैं। हिन्दू समाज की जन्मना-जाति-व्यवस्था व विषम सामाजिक व्यवस्थायें व समस्याययें भी इसमें एक कारण होतीं हैं। कई लोग इससे तंग आकर धर्म त्याग करते आये हैं व अब भी यदा-कदा कर देते हैं। इसे मानने वाले धर्माधीशों के कानों पर जू नहीं रेंगती। ऐसे लोग अज्ञान व स्वार्थ में खोये प्रतीत होते हैं। आज भी यह स्थिति है कि देश की आधी जनसंख्या के पास दो समय के भोजन की न्यूनतम व्यवस्था नहीं है। इन 65 करोड़ से अधिक लोगों की जिंदगी व इनके दुःखों का कुछ अनुमान तो लगाया ही जा सकता है। इसका भावी परिणाम घातक हो सकता है। अतः आवश्यकता है कि सरकार को सबसे अधिक ध्यान इन निर्धनतम व गरीब लोगों की समस्याओं के हल करने पर देना चाहिये, परन्तु यह तो तभी होगा कि जब अन्य सरकारी कार्यों से धन बचेगा। आज साधनों के देशवासियों के लिए उपयोग व उनके वितरण में सन्तुलन बिगड़ा हुआ है। सन्तुलन ठीक होगा तभी गरीबों के लिए कुछ किया जा सकता है। देश के सारे साधन प्रायःआहरी जनता के उत्थान, उन्नति व विकास में लगते प्रतीत होते हैं। आज स्मार्ट सिटी बनाये जाने का तो शोर सभी दिशाओं में सुनाई दे रहा है परन्तु निर्धनतम व्यक्ति की भूख दूर करने व उसकी न्यूनतम आवश्यकताओं रोटी, कपड़ा, मकान, शिक्षा, चिकित्सा व रोजगार पर शायद कम ही ध्यान दिया जा रहा है। आवश्यकता इस बात की है कि अतीत में हमारे निर्धन व सामाजिक दृष्टि से कमजोर लोगों को जो मुख्य धारा से दूर किया गया है, उसकी पुनरावृत्ति न हो। **यह काम सरकार के करने का है परन्तु इसके लिए आर्य समाज जैसे सामाजिक संगठनों की भूमिका भी है।** कुछ सामाजिक संगठन कार्य कर भी रहे हैं। जो कर रहे हैं वह प्रंशसा के पात्र है। अन्यों को भीं उनसे प्रेरणा लेनी चाहिये। दीनबन्धुओं के लिए प्रत्येक सुधी व्यक्ति को अपने जीवन में कुछ न कुछ करना चाहिये। **भूखे और रोगी व्यक्ति का कोई धर्म नहीं होता,** उसे तो येन-केन-प्रकारेण भोजन चाहिये जिससे उसकी जान बच सके। हम आशा करते हैं कि समाज के सभी मतों के बन्धु अपनी मान्यतओं व सिद्धान्तों से ऊपर उठकर निर्धनों के हितों का चिन्तन करेंगे और धनी व निर्धनता में जो जमीन व आसमान का अन्तर है, यदि उसे कुछ बांटा या कम किया जा सके तो यह धर्म का कार्य व सेवा होने के साथ देश सेवा होगी।

thearyasamaj.org

मर्यादा पुरूषोत्तम श्री रामचन्द्र जी का जीवन-चरित्र

गतांक से आगे

-राजवीर सिंह आर्य, बहादुरगढ़

अकम्पन का वध सुनकर रावण बड़ा क्रुद्ध हुआ और वह बड़ा दीन मुख हो मन्त्रियों की ओर देखने लगा। एक मुर्हूत भर विचार विमर्श करने के पश्चात् वह सबसे निपुण योद्धा प्रहस्त से बोला "हे युद्ध विशारद! आपके अन्य अब और कोई किसी के पास इन शत्रुओं को मारने का सामर्थ्य मैं नहीं देखता हूँ या फिर मैं स्वयं अथवा कुम्भकरण या निकुम्भ तथा इन्द्रजीत इस भार को उठा सकते हैं। इसीलिए तुम अपने अधीन सेना को लेकर शीघ्र ही युद्ध मैदान में जाओ।" रावण के उक्त प्रकार कथन करने पर प्रहस्त बोला "हे राजन्! मुझे अपने जीवन, पुत्र, स्त्री और धन रक्षणीय नहीं हैं, मैं आपके निमित्त युद्ध में अपने जीवन को होम कर सकता हूँ। आप शीघ्र ही वानरों की सेना को मेरे द्वारा हत हुआ देखेंगे।" इसके पश्चात प्रहस्त ने सेनापति को सेना तैयार करने की आज्ञा दी और बहुत शीघ्र तथा सावधान हुआ प्रहस्त सजे हुए रथ पर आरूढ़ होकर महती सेना से घिरा हुआ लंका से बाहर आया। नरांतक, कुम्भ हनु, महानाद और समुन्नत यह सब भयंकर योद्धा प्रहस्त के आगे-आगे चले। प्रहस्त के बड़े डील-डौल को देखकर राम मुस्कुरा कर विभीषण से बोले "यह कौन युद्ध करने के लिए आ रहा है।" विभीषण बोला कि "यह प्रहस्त नाम का राक्षस रावण का सेनापति है। यह तीन भाग सेना का अध्यक्ष है और बड़ा बलवान है तथा युद्ध विद्या का जानने वाला है।" तदन्तर राक्षसों और वानर सेना के मध्य घोर युद्ध होना शुरु हो गया। इस भयंकर युद्ध में नरांतक को द्विविद ने और दुर्मुख वानर ने फुर्तीले और बलवान समुन्नत को चूर-चूर कर दिया। महानाद को जाम्बवान के बल का शिकार होना पड़ा तथा कुम्भ हनु भी मारा गया। इन योद्धाओं को मरा हुआ जान प्रहस्त ने बहुत सी वानर सेना का विनाश किया। इस युद्ध में वानर और राक्षस शरीरों के पृथ्वी पर ढेर लग गये। इसके पश्चात नील ने प्रहस्त पर बाणों की बरसात कर दी। प्रहस्त ने भी नील पर बहुत से भयंकर बाण छोड़े। दोनों का भयंकर युद्ध हुआ और अंत में घायल हुए नील ने प्रहस्त के सिर पर एक बड़ी शिला दे मारी जिससे उसके सिर के कई टुकड़े हो गए। प्रहस्त के मारने के पश्चात बची हुई राक्षस सेना भाग खड़ी हुई और पुरी में प्रवेश कर गई। प्रहस्त को मरा हुआ रावण बोला कि "अब मैं स्वयं युद्ध में जाऊँगा और राम-लक्ष्मण सहित सारी वानर सेना का विनाश कर दूंगा। इसके पश्चात् रावण

की सेना का सिंहनाद सुनकर राम ने विभीषण से पूछा कि "महेन्द्र पर्वत तुल्य हाथियों से सेवित और बलवान शूरवीरों से युक्त यह किसका अपार दल आ रहा है।" विभीषण ने कहा "यह जो प्रातः काल के सूर्य समान लाल नेत्रों वाला हाथी पर सवार घंटा बजाता हुआ आ रहा है यह महोदर है, यह जो घोड़े पर सवार पर्वत समान आकार वाला है यह पिशाच नामा राक्षस है, यह जो चन्द्र समान उजले बैल पर चढ़ा हुआ आ रहा है यह त्रिसरा है, जो मेघाकार चौड़ी छाती वाला है वह प्रसिद्ध कुम्भ नामा वीर है और जिसका चन्द्र तुल्य छत्र प्रतीत होता है यह क्रूरुरकर्मा महात्मा राक्षसपति रावण है।" इतना वर्णन सुनने के पश्चात् राम ने धनुष पकड़ा और लक्ष्मण को साथ लिए युद्ध के लिए तैयार हो गया। रावण ने बहुत भयंकर संग्राम किया और सुग्रीव तथा लक्ष्मण को मूर्छित कर दिया। राम ने उसके रथ को तोड़ उसके मुकुट को भी काट दिया और उसके दर्प को यह कहकर चकनाचूर कर दिया कि तू इस समय सुबह से युद्ध कर रहा है, इसीलिए तुझे छोड़ रहा हूँ, तू फिर अपने रथ और धानुष सहित आना तब तेरा बल देखूंगा। राम के इस व्यवहार से पहली बार उस अभिमानी राजा का अहंकार समाप्त हुआ और वह मुँह लटकाए हुए लंकापुरी में प्रवेश हुआ। युद्ध में अपने आपको पराजित तथा प्रहस्त को मरा हुआ जानकर उसने एक भीम बल वाले राक्षस को आज्ञा दी कि उस निन्द्रा वश हुए कुम्भकरण को जगाओ और कहो कि राक्षसों के राजा आपका दर्शन चाहते हैं।" शीघ्र ही कुम्भकरण पृथ्वी को कंपाते हुए अपने भाई के समीप आया जो पुष्पक विमान पर बैठा हुआ और

thearyasamaj.org

बड़ा उदासीन दिख रहा था। कुम्भकरण को देखकर रावण अति प्रसन्न हुआ और उसे बड़े सम्मान से अपने पास बैठाया। पास बैठकर कुम्भकरण रावण से बोला ''हे राजन्! किस निमित मुझे बड़े आदर से जगाया है?'' रावण क्रोध में भरा हुआ भाई कुम्भकरण से बोला'' हे महाबल! तुम्हें शयन करते हुए बहुत समय हो गया है इसीलिए राम से जो भय हमें हो रहा है उसे तुम नहीं जानते! हमारे मुख्य-मुख्य राक्षस राम की सेना द्वारा मारे जा चुके हैं। हे महाबल! इसीलिए तुझे जगाया है कि उन सबको मारकर हमारा भय समाप्त करें। यही तुमसे संभावना है। हे बन्धुओं के हितैषी पराक्रमी कुम्भकरण, तु इन शत्रुओं को ऐसे छिन्न-भिन्न कर दे जैसे पवन बादलों को कर देती है।'' राक्षस राजा का विलाप सुनकर कुम्भकरण हंसता हुआ बोला कि ''हमने तो पहले ही आपका यह दोष देखकर आपको सावधान किया था। आप अभिमान से पहले तो गलत काम कर बैठते हो और बाद में मंत्रणा करते हो, जिससे स्पष्ट हैं कि आप नीति व अनीति को नहीं जानते। जो राजा क्षय, वृद्धि तथा, स्नान इन तीनों प्रकार के कर्त्तव्यों व राज धर्म के मर्म को ठीक-ठीक नहीं जानता, जो राजा धर्म, अर्थ और काम इन तीनों को यथायोग्य समय पर सेवन करता है वही वास्तव में राजधर्म को जानने वाला है। हे राजन्! जो अपने मन्त्रियों आदि से उचित समय पर सम्मति करता है और अपने बुद्धिमान सचिवों से परामर्श करके कार्य करता है वही राज धर्म को प्राप्त होता है। अस्तु हे राक्षेन्द्र! अब हो गया सो हो गया, अब आप संताप न करें। मैं रण में शत्रुओं का नाश करूंगा, चाहे स्वयं इन्द्र व यम भी क्यों न आ जायें। मेरी जीते जी तू क्यों राम से भयभीत हो रहा है। मैं अवश्य ही युद्ध में उसका हनन करूंगा। इतना कहकर कुम्भकरण हाथ में तीक्ष्ण शूल लिए युद्ध के लिए निकल पड़ा।

टिप्पणीः- प्रहस्त के मारे जाने पर रावण को यह ज्ञात हो गया था कि राम और उसकी सेना पर विजय पाना कोई साधारण कार्य नहीं है। क्योंकि प्रहस्त कोई सामान्य योद्धा नहीं था। उसकी वीरता का कई जगह रामायण में वर्णन आता है, उसे युद्ध विशारद की उपाधि मिली हुई थी जैसा कि आजकल किसी विषय में योग्यता प्राप्त करने पर पी.एच.डी. की उपाधि दी जाती है। इसमें प्रमाण देखिएः

नान्ययुद्धात्प्रपश्याति मोक्षं युद्धविशारद। (यु. का. सर्ग 25 श्लोक 5)। दूसरा रावण को राम ने यह कहकर छोड़ दिया कि तू काफी समय से युद्ध कर रहा है इसीलिए तुझे थका हुआ जानकर नहीं मार रहा हूँ। इस घटना ने रावण के मनोबल और अहंकार को नष्ट कर दिया जिससे वह बहुत भयभीत हो गया और इसी भय से उसने अपने भाई महापराक्रमी कुम्भकरण को बुला भेजा। पहले तो कुम्भकरण ने काफी कुछ कहा लेकिन फिर युद्ध के लिए तैयार हो गया। कुछ भाई रावण को प्रकाण्ड विद्वान, वेदों का ज्ञाता, ऋषि व महाजन नीतिवान मानते व लिखते हैं लेकिन जिस तरह से कुम्भकरण उसको फटकारता है, उससे तो यही लगता है कि वह राजधर्म भी नहीं जानता था। इसमें हम संक्षेप में रामायण में आया हुआ थोड़ा प्रसंग पाठकों के सामने रखते हैं देखिएः-

उपप्रदानं सान्त्वं च भेदं काले च विक्रमम्।
योगं च रक्षसां श्रेष्ठ तावुमौ च नयानयौ।।29।।
काले धर्मार्थकामान्यः समन्त्रय सचिवै सह।
निषेवेतात्मवां लोके न स व्यसनमाप्नुयात।।30।।
हितानुबंधमालोक्य कुर्यात्कार्य्यमिहात्मनः।
राजा सतार्थतत्त्वज्ञैः सचिवैबुद्धिजीविभि।।31।।

अर्थात् हे राक्षस श्रेष्ठ! जो पुरुष दान, साम, भेद, पराक्रम, योग, नीति, अनीति और धर्म, अर्थ, काम इन सबका सेवन मन्त्रियों की सम्मति से उचित समय पर करता है वह संसार में दुःखी नहीं होता। राजा को चाहिए कि अर्थ के जानने वाले बुद्धिमान सचिवों तथा अन्य सेवकों को पूछकर जिसमें अपना हित दिखे वहीं कार्य करें। अब पाठकगण स्वयं ही विचार करें कि जो अपने बड़े भाई को ऐसी वेद सम्मत बातें कह रहा है। वह एक शराबी व मांसाहारी व्यसनी व्यक्ति कैसे हो सकता है? राम चरितमानस और यहां तक रामायण में भी कुम्भकरण के साथ अन्याय किया है चाहे वह प्रक्षेप ही क्यों न हो। भाई के लिए लड़ना और अपने जीवन को बलिदान करना यह भ्रातृ प्रेम के अधीन बात थी। हाँ रावण के सम्बन्ध में इतना अवश्य है कि वह युद्ध विद्या का जानने वाला महापराक्रमी योद्धा तथा मायावी (छल-कपट) व कूटनीति का जानने वाला था। तीसरा जो कुम्भकरण के विषय में प्रचलित व रामचरित मानस में लिखित है कि वह छः महीने सोता था और छः महीने जागता था। इस विषय में हमारा

thearyasamaj.org

दृष्टिकोण यह है कि यह सृष्टि नियम व शारीरिक नियमों के विरूद्ध बात है। रामायण में ऐसा नहीं लिखा हुआ मिलता है। इसमें तो केवल जगाना लिखा है जिसमें संभावना है कि कुम्भकरण को रात के समय ही बुलवाया गया हो, दूसरा जगाने का तात्पर्य स्थिति से अवगत कराना भी हो सकता है। कुम्भकरण को लेकर रामचरित मानस में जो कुछ लिखा है उसे तो पढ़कर लगता है ऐसा तो स्वप्न भी नहीं आता है फिर और पंथों के ही नहीं हमारे व्यक्ति भी इस महाकाव्य को काल्पनिक बतायें तो आश्चर्य की क्या बात है? इसमें एक बानगी देखिए:

व्याकुल कुम्भकरण पहिं आवा।
बिबिध जतन करि ताहि जगावा।।

जब कुम्भकरण किसी तरह से भी नहीं उठा तो उस पर हाथी और घोड़े कुदवाए। तब भी वह नहीं उठा, तो एक गडरिये ने कहा कि उठा तो मैं दूंगा लेकिन प्राणों की रक्षा होनी चाहिए। आश्वासन मिलने पर उसने एक बहुत लम्बे आंकड़े को (लकड़ी काटने वाला) जिसकी लम्बाई कई मील थी उसको कुम्भकरण के नाक में घुसेड़ दिये जिससे वह छींक मारता हुआ उठ खड़ा हुआ और बड़ा क्रोधित हुआ। उसके क्रोध को शांत किया गया फिर उसने अपनी भूख मिटाने के लिए जो भोजन किया उसका वर्णन हम नहीं कर रहे हैं क्योंकि इससे बड़ी कोई गप्प नहीं हो सकती। अगले लेख में कुम्भकरण के अद्भुत व अविश्वसनीय युद्ध पर भी थोड़ी टिप्पणी व प्रकाश डालेंगे। यही सब बाते हैं जो रामायण जैसे शिक्षाप्रद ग्रंथ के महत्व को कम करती हैं।

- ❑ गृहस्थी रूपी नाव प्रेम, सहृदयता परस्पर भावनाओं का सम्मान, सहयोग, सेवा आदि गुणवत्ताओं पर निर्भर करता है।
- ❑ स्त्री व पुरुष दोनों के चित्त हृदय परस्पर जल के समान घुले मिले हुए हो तो जीवन रूपी गृहस्थ की नाव प्रसन्नता, सौन्दर्य पर आरूढ़ हो जाती है।

–राजहंस मैत्रेय

धूप अगरबत्ती एवं गायत्री महिमा हवन सामग्री

ऋतु अनुकूल

उत्तम प्रकार की जड़ी-बूटियाँ द्वारा संस्कार विधि के अनुसार
केवल उपकार की भावना से लागत-मात्र मूल्यों पर उपलब्ध

विशिष्ट	32.00	रु. प्रति किलो
उत्तम	40.00	रु. प्रति किलो
विशेष	50.00	रु. प्रति किलो
डीलक्स	70.00	रु. प्रति किलो
सर्वोत्तम	125.00	रु. प्रति किला
सुपर डीलक्स	300.00	रु. प्रति किलो

इसके अतिरिक्त अध्यात्म सुधा विधि के अनुसार हर प्रकार की हवन सामग्री आर्डर पर तैयार की जाती है।

निर्माता :

मै. लाजपतराय सामग्री स्टोर

856, कुतुब रोड, दिल्ली-110006

फोन : दुकान-23535602, 23612460, फैक्ट्री-32919010, निवास-25136872

thearyasamaj.org

बच्चों का चरित्र निर्माण क्यों और कैसे?

- नवनीत निगम

वर्तमान में यह विचारधारा अत्यन्त तीव्र गति से बलवती हो रही है कि परिवार, समाज व राष्ट्र को विश्व स्पर्धा में शीर्षस्थ करने हेतु मात्र अधिकाधिक पूंजी (धन) निर्माण, विकास व संग्रह की प्रथम व अन्तिम आवश्यकता है। परिणामतः लगभग प्रत्येक व्यक्ति येन-केन प्रकारेण बहुत ही अल्प समय में केवल अधिकाधिक धनोपार्जन के उपायों पर ही अपने मस्तिष्क को केन्द्रित किए हुए हैं। इससे अलग हटकर किसी अन्य विषय पर विचार करना उसे उबाऊ जान पड़ता है और उसे लगता है कि ऐसा करके वह अपने समय व ऊर्जा को अनावश्यक नष्ट कर रहा है।

सम्भवतः यही कारण है कि पाश्चात्य संस्कृति द्वारा पोषित, विकसित व रक्षित, पूंजी निर्माण की पताका फहराता, उदारता का नकाब ओढ़े, जनकल्याण का नारा बुलन्द करता हुआ, एक अखण्ड साम्राज्य की स्थापना को आतुर, जनजागरण के संकल्प को साकार करता हुआ एक आभामयी व्यक्तित्व का पिशाच रूपी संक्रात्मक रोग सम्राट, समाज व राष्ट्र ही नहीं वरन् समस्त विश्व को भ्रष्टाचार नामी महामारी से संक्रमित करता, समस्त अबाल, वृद्ध, वनिता को अपने सबल व सुदृढ़ बाहुपाश में समेटता, अपनी शक्ति और विजय पर गर्व से सिर ऊँचा किए **'भारतीय संस्कृति'** को मुँह चिढ़ाता व अहंकार से अठ्हस करता हिंसा, अपराध व अनाचार रूपी राज्यों की सीमाओं का निरन्तर विस्तार करता हुआ। अबाध गति से आगे बढ़ता चला जा रहा है। इसी के साथ यह कहने में भी संशय न होगा कि आज पूंजी निर्माण की पताका तले फूलने-फलने के उद्देश्य ने विद्या व शिक्षा को मात्र रोजी-रोटी के लक्ष्य पर ही स्थित कर उसके विस्तृत क्षेत्र को सीमित कर दिया है। कदाचित इसी कारण से विद्या जैसे अमूल्य रत्न व शिक्षण जैसे पुनीत कार्य का पूर्णतया व्यावसायीकरण होता जा रहा है। विद्यार्थी केवल उसी क्षेत्र की शिक्षा व विद्या पाना चाहता है जहां उसे अधिकाधिक धन प्राप्त हो सके और इसके लिए वह अधिकाधिक धन व्यय करते हुए विद्या व शिक्षा प्राप्त करना चाहता है तथा अध्यापक भी अधिकाधिक धन प्राप्त करके ही विद्या व शिक्षा देना चाहता है। अर्थात् विद्यार्थी व अध्यापक (आचार्य) के मध्य त्रोता और विक्रेता का सा सम्बन्ध स्थापित होता जा रहा है। जबकि मनुस्मृति के माध्यम से महर्षि मनु जी का स्पष्ट निर्देश है:-

य आवृणोत्यवितथं ब्रह्मणा श्रवणावुभौ।
समाता स पिता ज्ञेयस्तं न् द्रुह्येत्कदाचन्!!

(जो गुरु (आचार्य) ज्ञान के द्वारा कानों को परिपूर्ण करता है, सुनाता और पढ़ाता है उसे माता व पिता समझना चाहिए और उससे द्रोह, ईर्ष्या कभी न करनी चाहिए उसका कभी भी अपमान न करना चाहिए) अतः सिद्ध होता है कि अध्यापक/अध्यापिका तथा विद्यार्थी/विद्यार्थिनी के मध्य पिता-पुत्र अथवा माता-पुत्री का सम्बन्ध होना चाहिए। इसी के साथ विद्या व शिक्षा के मूल व परम लक्ष्य को स्पष्ट करते हुए यजुर्वेद के चालीसवें अध्याय में कहा गया है **'विद्या अमृतश्नुते'** अर्थात् विद्या का परम लक्ष्य अमरत्व की प्राप्ति करना है। तथैव किसी भी व्यक्ति को अमरत्व की प्राप्ति तभी सम्भव है जब वह शारीरिक, बौद्धिक व आत्मिक रूप से पूर्ण स्वस्थ व उन्नत हो और यह तभी हो सकता है जब वह अथर्ववेद के निर्देश **'ब्रह्मचर्येण तपसा देवा मृत्युमपाध्नत'** के अनुसार ब्रह्मचर्य व्रत का धारण, शुद्ध सात्विक शाकाहारी भोजन, सदाचरण का पालन, इन्द्रिय संयम व स्वाध्याय आदि का नियमित अभ्यास करते हुए संस्कार के रूप में आत्मस्थ कर ले। ऐसे व्यक्तियों को ही चरित्रवान की संज्ञा दी जाती है और इस विद्या को चरित्र निर्माण कहा जाता है। अतः यह बात पूर्णरूपेण सिद्ध हो जाती है कि विद्या व शिक्षा प्राप्ति का मूल व परम् लक्ष्य मात्र रोजी-रोटी तक ही सीमित न होते हुए सुसंस्कारित व चरित्रवान होना भी है।

अतः इस बात का विशेष ध्यान रखना होगा कि विद्या व शिक्षा का रोजगार परक बनाते-बनाते उसके परम लक्ष्य चरित्र निर्माण को भूल न जायें। क्योंकि किसी भी समाज व राष्ट्र का निर्माण मात्र बहुखण्डीय भवनों, बाग-बगीचों, पार्कों, सड़कों व कल-कारखानों

thearyasamaj.org

के निर्माण, ग्राम-ग्राम में विद्युतीकरण, दूरभाषीकरण व कम्प्यूटराइजेशन आदि से ही कदापि नहीं होता जब तक कि उसमें सुसंस्कारित व चरित्रवान नागरिकों का समावेश न हो। क्योंकि किसी भी समाज व राष्ट्र का सर्वागीण विकास करना व उसे चिरस्थाई रख पाना तभी सम्भव होगा जब उस समाज व राष्ट्र के नागरिक, आदर्श, सुसंस्कारित, चरित्रवान व सदाचारी होंगे। अत: यह कहना अतिश्योक्ति न होगी कि किसी भी समाज व राष्ट्र के निर्माण व विकास का मूल आधार वहां नागरिकों के चरित्र निर्माण पर ही निर्भर है।

ऋषियों ने मानव जीवन को चार भागों-ब्रह्मचर्य, ग्रहस्थ, वानप्रस्थ व संन्यास आश्रमों में इसीलिए विभक्त किया था कि जिससे व्यक्ति सर्वप्रथम ब्रह्मचर्य आश्रम में विद्याध्ययन के द्वारा चरित्र निर्माण कर विद्वान व सुसंस्कारित होकर जीवन की नींव सुदृढ़ करके परिपक्व बने, जिससे बाद के सभी आश्रम अर्थात् सम्पूर्ण जीवन व राष्ट्र का निर्माण हो सके।

आज श्रेष्ठ व उत्तम आचरण के व्यक्तित्व का अत्यन्त अभाव है, यही कारण है कि बच्चों को आदर्श मार्ग नहीं मिल पा रहा है मनुष्य जन्म से नहीं कर्म से महान् बनता है।

मातृमान्, पितृमान, आचार्यवान् पुरुषों वेद-वस्तुत: जब तीन उत्तम शिक्षक प्रथम माता, द्वितीय पिता व तृतीय आचार्य उच्च कोटि के होंगे तभी बालक ज्ञानवान चरित्रवान व सदाचारी होगा। महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती जी ने कहा है कि वह परिवार व कुल धन्य है, वह संतान बड़ी ही भाग्यवान है जिनके माता-पिता चरित्रवान, धार्मिक, विद्वान् व शिक्षित है। विशेषतया बच्चों का मस्तिष्क प्रदूषण रहित अतिकोमल होता है, इस समय जो ज्ञान उन्हें दिया जाता है वह स्मृति पटल से होता हुआ उसके चित्त पर संस्कार के रूप में अपनी छवि अंकित कर आजीवन दृढ़ हो जाता है। बच्चों की प्रथम पाठशाला घर ही है अत: माता-पिता का विद्वान, शिक्षित, सदाचारी व चरित्रवान होना अति आवश्यक है क्योंकि मानवीय गुण, धर्म सेवा, प्रेम, सहयोग, सहिष्णुता, दान, तप, त्याग, सहानुभूति, अनुशासन, संयम, समय पालन, सद्व्यवहार आदि बच्चा अपने व आस-पास के परिवारों व समाज से ही सीखता है। जिस परिवार से बच्चों को ऐसा मार्गदर्शन नहीं मिल पाता वे पढ़ने व सुनने का लाभ न लेते हुए अपने जीवन उद्देश्य से भटक जाते हैं और आजीवन दु:खी रहते हैं।

विद्वानों ने कहा है, जैसा खाओगे अन्न वैसा बनेगा तन, जैसा बनेगा तन् वैसा होगा मन, जैसा होगा मन वैसी होगी बुद्धि वैसे ही होंगे विचार, जैसें होंगे विचार वैसे ही होंगे कर्म, जैसे होंगे कर्म वैसा ही होगा फल अर्थात् यदि शुद्ध सात्विक शाकाहारी व पौष्टिक पौष्टिक भोजन किया जायेगा तो मन, बुद्धि व विचार भी शुद्ध सात्विक, पुष्ट व उन्नत होंगे और ऐसा होने पर निश्चित रूप से उत्तम कर्मो को ही जन्म मिलेगा और जब कर्म उत्तम होंगे तो फल तो उत्तम मिलना ही है और ऐसा होने पर हमारी अर्थात् आत्मा की निरन्तर उन्नति होकर सुख प्राप्त होगा, अन्यथा दु:ख तो मिलना ही है। अत: प्रत्येक माता-पिता को चाहिए कि वे बच्चों को प्रारम्भ से ही शुद्ध सात्विक पौष्टिक व शाकाहारी भोजन जैसे गाय का दूध, दही, घी, मट्ठा, मिष्ठान, शहद, आंवला, सूखे मेवे, ऋतु फलों, रोटी, दाल, चावल, हरी सब्जियां व सलाद आदि का ही सेवन करायें, क्योंकि यह बुद्धि बल व ओज (आन्तरिक रोग प्रतिरोधक क्षमता) बढ़ाने व शान्ति देने वाला है। इसके सेवन से बच्चे हुष्ट-पुष्ट, निरोगी व प्रसन्न रहेंगे। उनकी नींव पूर्णतया दृढ़ हो जायेगी जिस पर उनका पुरा जीवन आधारित होगा।

आज माता-पिता व आचार्य जो बच्चों के उन्नत जीवन व चरित्र निर्माण का आधार है, अपनी प्राचीन उत्तमोत्तम संस्कृति व सभ्यता को छोड़कर पाश्चात्य सभ्यता पर आधारित चकाचौंध से परिपूर्ण रहन-सहन, खान-पान, आचार-व्यवहार, मनोरंजन व संगीत आदि की ओर अति तीव्र गति से दौड़े जा रहे हैं, किसी के पास भी बच्चों के चरित्र निर्माण कर उन्हें सुसंस्कारित करने का समय ही नहीं है समय है तो अधिकाधिक धन कमाने, भवन बनाने, विलासिता बढ़ाने, टेलीविजन देखने, निरर्थक राजनीतिक चर्चा करने, ऊँचे से ऊँचा पद प्राप्त करने हेतु साम्प्रदायिकता जातिगत विद्वेष एवं पाखण्ड फैलाते हुए अयोग्य संतति उत्पन्न करने का है। आज समाज में जो भी अपराध, हिंसा, अनाचार, बलात्कार, अनुशासनहीनता, दुर्गण व दुर्व्यसन बढ़ रहे हैं इसका मूल कारण व्यक्ति का सुसंस्कारहीन व चरित्रहीन

thearyasamaj.org

होना ही है। आर्यावतीर्य ऋषियों ने सोलह संस्कारों की श्रृंखला के साथ प्रेरणा दी कि इनके द्वारा बच्चों को क्रम से समयानुसार सुसंस्कारित अवश्य करो, क्योंकि सुसंस्कारों से बालक का शरीर, मन, बुद्धि व आत्मा उन्नत बनते हैं और उसके व्यक्तित्व का सापेक्ष विकास होता है।

बच्चा तो कुम्हार के कच्चे घड़े के समान है जिसे अति कोमलता से पीट-पीट कर संवार-संवार कर तपा-तपा कर जैसा चाहें सुन्दर व सुदृढ़ बनाया जा सकता है। आज का बच्चा कल का किशोर, परसों का युवक और भविष्य का कर्णधार है इसीलिए ऋषियों-मुनियों ने कहा है जो माता-पिता व आचार्य बच्चों को विद्या द्वारा शिक्षित करने के उद्‌देश्य से उनकी ताड़ना करते हैं वे उन्हें अमृत पिला रहे हैं और जो इसके विपरीत अत्यधिक लाड-प्यार के कारण उन्हें अनुशासित नहीं रखते वे उन्हें विष पिला रहे हैं।

विचारणीय प्रश्न है कि अधिकांशत: व्यक्ति ज्ञान व आदर्शवादिता का परिचय देते हुए बाते तो करते हैं भगवान राम, कृष्ण, शंकर व दयानन्द, वेद, उपनिषद्, गीता, रामायण, माता-पिता व आचार्य की ओर कहते हैं कि हम इन्हें बहुत मानते हैं किन्तु व्यक्ति जीवन के प्रायोगिक व व्यवहारिक पक्ष में इनकी बतायी गयी बाते बिल्कुल नहीं मानते इनके दिखये गये मार्ग पर कदापि नहीं चलते। अत: माता-पिता, आचार्य (गुरु/अध्यापक) व पुरोहित का विद्वान व उत्तम शिक्षायुक्त होने के साथ-साथ उनका जीवन श्रेष्ठ आचरण, व्यवहार व सद्‌चरित्र से परिपूर्ण होना भी अति आवश्यक है। यदि माता-पिता चाहते है कि उनके बच्चे एक सम्मानित व श्रेष्ठ नागरिक बने और यशस्वी हो तो उन्हें चाहिए कि वे बच्चों को पान, तम्बाकू, पान मसाला (गुटखा), धूम्रपान, मदिरा सेवन व मांसाहार, अण्डा, मछली आदि अखाद्य पदार्थो से सदैव दूर रखें तथा दूर-दर्शन पर दिखायी जाने वाली अश्लील फिल्मों, अभद्र विज्ञापनों को न देखने दे, उन्हें आधुनिक फैशन की अश्लील वेशभूषा, पाश्चात्य सभ्यता पर आधारित अभद्र डान्स व सांस्कृतिक कार्यक्रमों से भी बचाएं। किन्तु इसके साथ ही यह भी आवश्यक है कि इन सब से माता-पिता भी अपने को दूर रखें। अध्यापक-अध्यापिकाओं को चाहिए कि विद्यालय में होने वाले किसी भी प्रकार के उत्सव आदि में भी इस प्रकार के कार्यक्रम न कराये। बच्चों को यह बताना व सिखाना भी अत्यन्त आवश्यक है कि वे अपने ऋषियों, मुनियों, महापुरुषों, माता-पिता व आचार्य के आदर्शो व मार्ग दर्शन का अनुकरण व अनुशरण अवश्य करें। बच्चों को सदैव सादा जीवन उच्च विचार की प्रेरणा दें।

माता-पिता को चाहिए कि घर पर निरर्थक चित्रकथा (कामिक्स) व अश्लील साहित्य न रखे। बच्चों को महापुरुषों के जीवन चरित्र व देश प्रेम से सम्बन्धित साहित्य ही पढ़ने को दे, क्योंकि सद्‌साहित्य ही समाज का दर्पण होता है। घर की दीवारों पर भी देशभक्तों, वैज्ञानिकों व महापुरुषों के वीरता व साहस से परिपूर्ण प्रेरणा दायक चित्रों को टांगे। बच्चों को तोता-मैना, परियों व भूत प्रेत से सम्बन्धित काल्पनिक कहानियां सुनाये बल्कि देश प्रेम, वीरता व साहस से युक्त निर्भयता, बुद्धिचातुर्य्य व आत्मबल बढ़ाने वाली कहानियां, कविताएं, गीत, भजन व श्लोक सुनायें व याद करायें, इससे बच्चों को अच्छे संस्कार व आन्तरिक प्रेरणा मिलेगी।

बच्चों को ब्रह्म मुहूर्त में जगाने की आदत डालें व नियमित रूप से शौच, स्नान आदि के बाद आसन, प्राणायाम, ध्यान, व्यायाम व ईश्वर प्राणीधान करने की प्रेरणा दे जिससे उनमें अपने स्वास्थ्य के प्रति सजग रहते हुए शरीर को सुन्दर स्वस्थ व बलिष्ठ रखने के प्रति रूचि व चेतना जागृत होगी तथा आत्मबल भी बढ़ेगा। उन्हें सदैव ब्रह्मचर्य का पालन करना सिखायें। बच्चों को प्रेरित करे कि वे परिवार व समाज के सभी बड़े, सम्मानित व्यक्तियों व विद्वानों का सम्मान व आदर करें, उनको यथोचित अभिवादन चरण स्पर्श व नमस्ते करें। गलती होने पर नम्र होते हुए माफी मांगे, समय से विद्यालय जायें, समय से पढ़े, रात्रि में देर तक न पढ़े, समय से खेले तथा अल्पाहार व भोजन भी समय से ही ग्रहण करें। रात्रि में देर तक न जागते हुए जल्दी सो जाये और प्रात: काल जल्दी उठे। जीवन में कठिनाइयों व परेशानियों से तनिक भी न घबरायें न ही विचलित हो बल्कि धैर्य से काम लें। सभी से प्रेम से बोले, स्वभाव से सदा नम्र रहें, भाई, बहिन, मित्र या अन्य किसी भी बड़े-छोटे व बराबर वाले से छोटी-छोटी बातों

thearyasamaj.org

पर बहस व लड़ाई झगड़ा न करे। माता-पिता व आचार्यों को चाहिए कि वे जो कुछ भी बच्चों को सिखाना चाहते है उन सभी गुण कर्म व स्वभावों को स्वयं अपने आचरण व व्यवहार में अवश्य धारण करें और बच्चों के समक्ष आदर्श प्रस्तुत करते हुए प्रेरणा दे कि समाज में किसी भी व्यक्ति की पहचान व प्रतिष्ठा, पद, जाति, वर्ण, सम्प्रदाय व आर्थिक सम्पन्नता से नहीं होती बल्कि उसके उत्तमोत्तम व श्रेष्ठ गुण, कर्म व स्वभाव से होती है।

बच्चों को स्वयं अपने-अपने परिवार, समाज, देश व राष्ट्र के गौरव को ऊँचा उठाने के लिए अधिकाधिक परिश्रम करते हुए बहुत अधिक आगे बढ़ना है, उन्हें अन्यों से श्रेष्ठ व महान् बनना है।

सत्य व धर्म परेशान तो हो सकता किन्तु पराजित कभी नहीं होता, इसीलिए कहा गया है **'सत्यमेव जयते'** सदा सत्य की ही विजय होती है और **'सुखस्य मूलम् धर्मः'** सुख (आनन्द), उन्नति एवं विजय का आधार धर्म है। अतः श्रेष्ठ व महान बनने के लिए असत्य व अधर्म का त्याग करते हुए सदैव धर्म व सत्य का अनुकरण, अनुसरण व सेवन करते हुए **विद्या ददादि विनयम्, विनयादृयाति पात्रताम्। पात्रत्वाद् धनमाप्नोति, धनाद् धर्मम् ततः सुखम्** (विद्या के द्वारा विनय, विनय से पात्रता, पात्रता के द्वारा धन, धन से धर्म तथा धन के द्वारा सुख की प्राप्ति होती है) के लक्ष्य व संकल्प को साकार करते हुए निरन्तर अध्ययनशील प्रयत्नशील व कर्मशील रहना है, यही जीवन की सफलता का सोपान है। सदाचारी व चरित्रवान बच्चे ही देश समाज व राष्ट्र की सुदृढ़ आधारशिला है। अतः बच्चों को ज्ञानवान, सुसंस्कारित, चरित्रवान व सुयोग्य नागरिक बनाकर राष्ट्र को देना ही सच्ची देशभक्ति, राष्ट्रभक्ति व ईश्वर-भक्ति है। अतैव सभी लोगों को इस महत्वपूर्ण व पुनीत कार्य में अपनी सकारात्मक भूमिका निभाते हुए निरन्तर प्रयत्नशील रहने का प्रयास करते हुए अपने मौलिक व नैतिक कर्तव्य व धर्म का पालन सुनिश्चित करना चाहिए।

सत्यं, रूपं, श्रुतं, विद्या, कौल्यं, शीलं, बलं, धनम्।
शौर्य च चित्रभाष्यं च दशेम स्वर्गयोनयः॥

सत्य, सुन्दर रूप, शास्त्र-श्रवण, कुलीनता, शील, बल, धन, शूरता और आश्चर्य भाषण का सामर्थ्य ये दस स्वर्ण के साधन है।

- लखनऊ, उत्तर प्रदेश, मो. 9919831530

आत्म शुद्धि-पथ (मासिक) सम्बन्धी घोषणा

फार्म-4 (नियम 8 देखिए)

1.	प्रकाशन का स्थान	: बहादुरगढ़
2.	प्रकाशन अवधि	: मासिक
3.	मुद्रक का नाम	: स्वामी धर्ममुनि
4.	क्या भारत का नागरिक है?	: हाँ
5.	मुद्रक का पता	: आत्म-शुद्धि आश्रम, बहादुरगढ़, जिला-झज्जर (हरियाणा)-124507
6.	प्रकाशक का नाम	: स्वामी धर्ममुनि
7.	क्या भारत का नागरिक है?	: हाँ
8.	प्रकाशक का पता	: आत्म-शुद्धि आश्रम, बहादुरगढ़, जिला-झज्जर (हरियाणा)-124507
9.	सम्पादक का नाम	: स्वामी धर्ममुनि
	क्या भारत का नागरिक है?	: हाँ
	सम्पादक का पता,	: आत्म-शुद्धि आश्रम, बहादुरगढ़, जिला-झज्जर (हरियाणा)-124507
	उन व्यक्तियों के नाम पते जो समाचार पत्र के स्वामी हों तथा जो समस्त पूंजी के एक प्रतिशत से अधिक के साझेदार या हिस्सेदार हों	:

मैं स्वामी धर्ममुनि एतद् द्वारा घोषित करता हूं कि मेरी अधिकतम जानकारी एवं विश्वास के अनुसार ऊपर दिये विवरण सत्य हैं।

दिनांक 15.3.2015

स्वामी धर्ममुनि (प्रकाशक)

thearyasamaj.org

बढ़ते विश्व फैशन का आधार: शाकाहार

- रामनिवास लखोटिया

इस लेख के शीर्षक को पढ़कर चौंकिए मत। यह सत्य है जिसका अनुभव मैंने किया है और आप भी कर सकते हैं। कुछ ही समय पूर्व मेरे मन में एक भावना उठी कि कम्प्यूटर के द्वारा इन्टरनेट की सहायता से देखूँ कि विश्व में शाकाहार के बारे में क्या कार्य हो रहा है। जब गूगल के माध्यम से इन्टरनेट द्वारा जानकारी प्राप्त हुई तो पता लगा कि सैकड़ों संस्थाएं और व्यक्ति शाकाहार के पक्ष में लिख रहे हैं, बोल रहे हैं या कार्य कर रहे हैं और कई हजारों पृष्ठों का मसाला शाकाहार के पक्ष में विश्व में विभिन्न इन्टरनेट के स्थानों में उपलब्ध है। जैसे हौलैण्ड की साइबर ग्राम वैगा टोपिया के बारे में आपको जानकर आश्चर्य होगा कि यह शत प्रतिशत शाकाहारी ग्राम है। इसी प्रकार शाकाहार और जानवरों के अधिकारों के लिए लड़ रहे गैर सरकार संगठन पेटा के प्रमुख जैसलबेकर एवं अन्य अधिकारियों ने इस सम्बन्ध में जन जागरण अभियान प्रारम्भ कर दिया है। हाल ही में कोलकत्ता में डिजनी पिक्सर की मछलियों के प्रति सद्भावना रखने वाली फिल्म 'फाइनडिंग नैमो' दिखलाई गई थी जिसका उद्देश्य था कि सिनेमा जाने वाले व्यक्ति मछलियों के दर्द को महसूस करें और उन्हें खाना बन्द कर पूर्णत: शाकाहारी बनें। इस अवसर पर पेटा के कार्यकर्ताओं ने ''मछलियाँ हमारी मित्र हैं हमारा खाना नहीं'' के बड़े-बड़े बैनर का भी प्रदर्शन किया जोकि उस फिल्म में भी प्रदर्शित था। पेटा के एक प्रमुख ''निम्मीफिश'' भी इस फिल्म का प्रथम प्रदर्शन देखने गए थे। विश्व विख्यात टाइम पत्रिका ने न्यूयार्क के एक मशहूर खाना बनाने वाले लुई लांजा को पूर्णत: ऐसा भोज बनाने का निमन्त्रण दिया जो 2025 के लिए शरीर और दुनिया के लिए उत्तम रहेगा। इस भोजन को इतना स्वादिष्ट बनाया गया कि इसमें मांस की जगह टोफू कटलेट और केला की स्वादिष्ट आइसक्रीम आदि रखी गई जिससे कैलोरी के संख्या और चरबी का सेवन भी बहुत कम हो सकेगा। इसी संस्था ने आंकड़े प्रकाशित किये हैं कि अमेरिका में प्रति वर्ष दस लाख व्यक्ति मांसाहार का त्याग कर शाकाहार अपना रहे हैं और अमेरिका में अब तक 1 करोड़ 70 लाख व्यक्ति शाकाहारी हो गए हैं। इसी प्रकार से इंग्लैण्ड में प्रत्येक सप्ताह 2 हजार व्यक्ति शाकाहारी बन रहे हैं। प्रस्तुत लेख में हमने विश्व के आधुनिक फैशन की हस्तियों में बढ़ते हुए शाकाहार का जिक्र करते हुए शाकाहार के लाभ पर प्रकाश डाला है।

विश्वविख्यात हस्तियाँ शाकाहार की ओर

यह बहुत ही प्रसन्नता की बात है कि विश्वविख्यात दिग्गज जैसे सरपॉल, मैकार्टनी, मार्टिना नवरतिलोवा, वायन एडम्स डयू बैरोमोर, रिचर्ड गेरे पामेला एंडरसन, बुड़ी हरेल्सन, एलिशिया सिलवरस्टोन, नतालिया पोर्टमैन आदि शाकाहारी हैं।

अमेरिका के व्हाइट हाउस के मैन्यू में बाका बर्गर नाम का व्यंजन और जोड़ा गया है, जो विशुद्ध रूप से पूर्णत: शाकाहारी है। इसी प्रकार ब्रिटेन में औपचारिक भोज समारोह में परम्परागत रोस्ट बीफ का स्थान अब वेजीटेबल करी ने ले लिया है। इस प्रकार दुनिया के लाखों लोग बेहतर और स्वस्थ जीवन के लिए शाकाहार को अपना रहे हैं। अमेरिका के विश्वविख्यात डॉ. नील बर्नार्ड जो कुछ समय पूर्व भारत में भी आए थे उन्होंने यह बात प्रमाणित की है कि शाकाहार से मधुमेह के रोगियों को कैंसर और अन्य बीमारियों का खतरा बहुत कम हो जाता है जिससे हममें से 90 प्रतिशत व्यक्ति मधुमेह के रोग को रोक सकते हैं। इसलिए उन्होंने अमेरिकन जनरल ऑफ क्लिनिकल न्यूट्रिशन में इस बात पर जोर दिया है कि शाकाहारी खाद्यों, फल, सब्जियां आदि का सेवन मधुमेह के रोगी करें तो उन्हें बहुत ही लाभ मिलेगा। इसी प्रकार कोरनेल विश्विद्यालय के डॉ.टी. कॉलिन कैम्पबेल ने कहा है कि अधिकांश कैंसर और हृदय रोग शाकाहार से रोके जा सकते हैं। कैलीफोर्निया विश्वविद्यालय के डॉ. डीन आरनिश ने शाकाहार द्वारा जीवन शैली में परिवर्तन कर हृदय की चीर-फाड को रोक कर धमनियों में खून का प्रवाह पुन: चालू किया है। यही कारण है कि सारी दुनिया में बड़े-बड़े विख्यात खिलाड़ी, डाक्टर, सिनेमा स्टार आदि अब शाकाहार की ओर बढ़ रहे हैं। पेटा की ऐनिमल टाइम्स शीतकालीन 2004 पत्रिका में डॉ. नील बरनार्ड ने एक प्रश्न का उत्तर देते हुए बताया है कि सन्तुलित शाकाहार से स्तन कैंसर और विभिन्न प्रकार के कैंसर

thearyasamaj.org

रोग और हृदय रोग, मधुमेह, मोटापा और जीव लेवा बीमारियां रोकी जा सकती हैं।

मांसाहार के द्वारा जानवरों पर क्रूरता ही क्रूरता

विश्व की आधुनिक हस्तियों में से अधिकांश ने भोजन के लिए जिबह किए जाने वाले जानवरों के साथ बरती जाने वाली क्रूरता को अपनी आंखों से देखा है। उन्हें जब मालूम चला कि उनके भोजन के लिए जानवरों को किस क्रूरता के दौर से गुजरना पड़ता है तो उन्होंने स्वयं ही आगे होकर शाकाहार को अपनाना प्रारम्भ किया। इसी कड़ी में फैशन उद्योग में विख्यात मॉडल जॉन अब्राहम ने उसी दिन से शाकाहार अपना लिया था, जिस दिन उन्हें महसूस हुआ कि उनका भोजन बनने वाले कुछ बेजुबान जानवर अगले दिन का सूरज नहीं देख पायेंगे। वे कहते हैं-''उन्हें अन्धेरे कमरे में या पिंजरे में ठूस-ठूस कर रखा जाता है। इसी तरह थोड़े बड़े हो चुके जानवरों को निर्ममता पूर्वक मारा जाता है। अपने को जिबह के लिए जाता देख इन जानवरों का रोम-रोम काँपा करता है और उन्हें केवल इसलिए मारा जाता है कि मेरे जैसे कुछ इन्सानों को भोजन मिल सके। जिबह के दौरान कई जानवरों को गला रेत कर उन्हें तड़प-तड़प कर मरने के लिए छोड़ दिया जाता है, जबकि तमाम की जिन्दा ही खाल खींच ली जाती है। यह वास्तव में क्रूरता की पराकाष्ठा है।'' इसी तरह की सोच डॉ. अदिती गोवित्रीकर की है जो कहती हैं कि स्वस्थ एवं फिट रहने का एकमात्र उपाय है शाकाहार। वह कहती हैं- ''शाकाहारी भोजन में स्वस्थ शरीर के लिए आवश्यक प्रोटीन और विटामिन प्रचुर मात्रा में पाए जाते है''। इनके अलावा भारत की अन्य दिग्गज हस्तियां शाकाहार के प्रचार-प्रसार में पेटा को अपनी मदद दे रही हैं। जैसे अमिताभ बच्चन, महिमा चौध री, जुही चावला और अनिल कुम्बले जानवरों के पक्ष में अपील कर रहे हैं और शाकाहार का पूरा समर्थन करते हैं। यहां तक कि हेमन्त त्रिवेदी ने मॉडलों की पोशाक ऐसी डिजाइन की हैं जो कि भिन्डी, मिर्च और हरे टमाटर के रूप में हैं। यही नहीं बड़े-बड़े एवं विख्यात उद्योगपति जैसे, मुकेश, अम्बानी, अनिल अम्बानी, गोविन्द हरि सिंहानिया, सीताराम जिंदल, डालमिया, चेतन सेठ, योगेन्द्र कुमार मोदी, वीडिया कोन के धूत, अनल जीत सिंह आदि पूर्णतया शाकाहारी हैं।

उपसंहार- यह दुर्भाग्यपूर्ण है कि अज्ञानतावश कुछ पीढ़ी के लोग अन्डे एवं मांस का सेवन देखा देखी कर रहे हैं। ऐसे नवयुवकों को जब आधुनिक विश्व फैशन की हस्तियों के बारे में पता चलता है या पता चलेगा तो वे स्वयं ही शाकाहार की ओर बढ़े। इस बारे में सभी शाकाहार प्रेमियों का कर्तव्य है कि वे शाकाहार के लाभ का व्यापक प्रचार-प्रसार करें और उपरोक्त जानकारी द्वारा युवा वर्ग में शाकहार के प्रति उनमें रूझान पैदा करें।

आप आत्मशुद्धि आश्रम को निम्न प्रकार से सहयोग दे सकते हैं-

1. आत्मशुद्धि पथ के संरक्षक सदस्य व आजीवन सदस्य बनकर, वार्षिक सदस्य स्वयं बनकर व अपने हितैषियों को बनाकर, विज्ञापन देकर अपने किसी हितैषी की स्मृति में उनका जीवनचरित्र छपवाकर।
2. बाल कल्याण सदन के छात्रों को पुस्तकें, कॉपी, वस्त्र देकर और धर्मार्थ नेत्र चिकित्सालय आदि सेवाकार्यों में आर्थिक सहयोग देकर एवं भोजन के लिए आटा, दाल, चावल आदि खाद्य सामग्री भेजकर। गौशाला में गौदान एवं खल-चूरी, दाना, भूसा आदि भेज सकते हैं।
3. बाल कल्याण सदन के छात्रों में से किसी एक को गोद लेकर उसका सम्पूर्ण व्यय 1000/- रुपये मासिक के हिसाब से साल भर का 12000/- रुपये छात्रवृत्ति देकर आप सहयोग कर सकते हैं।
4. आश्रम में प्रातराश, मध्याह्न का भोजन, मध्याह्नोपरान्त जलपान एवं रात्रिकाल के भोजन का व्यय लगभग 2500/- रुपये है। हमारी हार्दिक इच्छा है कि 365 यजमान बनें। एक दिन का भोजन देकर भोजन समस्या का समाधान कर सकते हैं।

कमरों के नाम लिखवाने के इच्छुक सम्पर्क करें : आपके प्रिय आत्मशुद्धि आश्रम में 1 कमरा 31000/- 1 कमरा 100000/-, आप सभी दानी महानुभावों से निवेदन है कि अपना अथवा अपने किसी स्वजन की स्मृति मध्य उनके नाम का पत्थर लगवाकर अपने स्वजन का नाम उज्ज्वल कर पुण्य एवं यश के भागी बनें।

धन्यवाद! –व्यवस्थापक आश्रमसम्पर्क सूत्र : 01276-230195, 9416054195

thearyasamaj.org

गाय का घी एक श्रेष्ठ औषधि है

- डॉ. रामचन्द्र शाकल्य

गो-घृत को आयुर्वेद में अमृत कहा गया है। इसमें कोलेस्ट्राल की मात्रा कम होती है। यह पीत वर्ण का होता है और सुपाच्य होता है। गाय का घी खाने से भारीपन नहीं होता।

गो-घृत सब स्नेहों में सबसे उत्तम माना गया है। गाय का घी स्निग्ध, गुरु, शीत गुणों से युक्त होता है। स्निग्ध होने के कारण वात को शांत करता है।

शीतवीर्य होने से पित्त को नष्ट करता है और अपने समान गुणवाले कफदोष कफध्न औषधियों के संस्कार द्वारा नष्ट करता है। गो-घृत रस धातु, शुक्र धातु और औज के लिए हितकारी होता हैं। यह दाह को शांत करता हैं, शरीर को कोमल करता है और स्वर एवं वर्ण को प्रसन्न करता है। गो-घृत से स्मरण शक्ति और धारणा शक्ति बढ़ती है, इन्द्रियों बलवान् होती है तथा अग्नि प्रदीप्त होती हैं।

अनेक रोगों में औषध द्रव्यों से सिद्ध घृत का उपयोग भी किया जाता है। जैसे-त्रिफलाघृत, अवशगंधा घृत आदि।

गाय का शुद्ध घी एक बहुउद्देशीय एरोमेटिक पेनकिलर तेल है। जिसकी दो बूंद ने अपने रोगी के लिए रामबाण मानते हैं (जीरों कोलेस्ट्रोल का यह घी महंगा जरूर हैं।)

नींद न आने वालों को- गाय के दूध से बने शुद्ध घी की दो बूंदे नाक और नाभि में लगने से नींद आने लगती है।

अगर हाथ-पैर के तलवों में जलन होती है तो गाय का घी मलना चाहिए। तुरंत आराम मिलेगा। सिर दर्द में गाय का मक्खन या घी सिर पर मलें।

यदि आंखे कमजोर हो या अंधेरा छाया हो तो गाय के घी के साथ काली मिर्च का चूर्ण मिला कर खाएं। अवश्य लाभ होगा। गो-घृत (कम से कम दस वर्ष पुराना) 10 ग्राम प्रतिदिन गर्म करके और इसमें 6 ग्राम मिश्री मिलाकर रोगी को पिला दें। पागलपन के लिए अत्युत्तम नुस्खा है।

किसी भी प्रकार का विष खा लिया हो या विष धोखे से खा लेने का भय हो तो शीघ्र ही विशुद्ध गाय का घी 150 से 250 ग्राम में काली मिर्च आधा से दो ग्राम मिलाकर पिघलाकर पिलायें तो शीघ्रता में ऐसा करने पर विष का प्रभाव दूर हो जाता है। जितनी जल्दी हो यह घृत पिलावें। इससे शीघ्र ही लाभ प्राप्त होगा गर्भपात-सगर्भावस्था में अशोक चूर्ण को गो-घृत के साथ लेने पर गर्भपात से रक्षा होती हैं।

वीर्य दोष- अश्वगंधा चूर्ण गाय के घी और मिश्री में मिलाकर देने से अथवा आवले का रस गाय के घी के साथ देने से वीर्य की वृद्धि तथा शुद्धि होती है। शुक्र नाश में इलायची और हींग 200 से 300 मि. ग्राम गाय के घी के साथ देने से लाभ होता हैं।

मस्तिष्क बलदाता घी

विधि- एक सेर उत्तम गो घृत में आधा पांव लड्डू गुड़ कूट कर डाल दें और मन्द-मन्द अग्नि पर पकाते रहें। पहिले गुड़ नीचे बैठ जाएगा किन्तु बाद में ऊपर आना आरम्भ होगा, यहां तक की तमाम गुड़ ऊपर तैर आवेगा परन्तु अभी इसमें चेप बाकी होगा। इसलिए कुछ देर और पकने दें। अब देखे कि पकते-पकते चेप दूर हो गया है और गुड़ लाख की भांति का होने लगा है तब उसे तत्काल अग्नि पर से उतार ले यदि असावधानी से देर हुई तो घी कड़वा हो जाएगा और गुड़ को घी से पृथक कर लें (इसे बच्चे बताशों की तरह खा जाते है) और घी को किसी शुद्ध पात्र में सुरक्षित रखें।

गुण- यह भी अग्निमांध, निसियां और मस्तिष्क की दुर्बलता के लिए अनुपम वस्तु है। मस्तिष्क की दुर्बलता और विशेषकर हष्टिमांध को दूर करने के लिए इस घी का इस्तेमाल बहुत गुणकारी सिद्ध होता है। इसके निरंतर सेवन से दृष्टि अत्यन्त तीव्र हो जाती है। यद्यपि इसके गुण तनिक देर से प्रकट होते है परन्तु इसके गुण उत्तम और स्थाई होते हैं।

हिचकी में- गाय का घी 20 ग्राम सुखोएण चम्मच द्वारा धीरे-धीरे देने से हिचकी बन्द हो जाती हैं।

शक्तिबर्धक-गो-घृत में एक हरड़ को तलकर खाने और बचे हुए घी को रोजाना प्रात: एक समय 40 दिन ब्रचचर्य का पालन करते हुए पीने से मनुष्य

thearyasamaj.org

शतायु होकर हष्ट-पुष्ट हो जाता हैं अथवा शुद्ध गो-घृत 10 ग्राम, 20 ग्राम शहद एवं 250 मि. लि. दूध। तीनों को मिलाकर प्रतिदिन नियमित 40 दिन तक प्रातः सेवन करने से मनुष्य में बल वीर्य व कांति की वृद्धि होती हैं एवं वृद्धावस्था शीघ्र नहीं आती। अथवा गो-घृत 6 माशे, मुलहठी 6 माशे और शहद 3 माशे इन इन सबकों मिलाकर चाटें और ऊपर से दूध मिश्री मिला हुआ 21 दिन तक सेवन करने से शरीर में बल, वीर्य बढ़कर शक्ति बढ़ती हैं।

दांतो से जीभ का या औंठ का कटना-प्रायः खाना खाते समय या बिरने से दांतों द्वारा जीभ कट जाती है या औंठ कट जाते हैं। ऐसी स्थिति में गो घृत दिन में 3-4 बार लगाने से घाव शीघ्र ही भर जाते है एवं दाह भी मिट जाती हैं। अद्‌भुत है।

- सेवानिवृत आयु, मेडिकल ऑफिसर, इन्दौर

आत्म शुद्धि पथ के संरक्षक सदस्य

1. श्रीमती इन्दुपुरी जे.के. मेमोरियल ट्रस्ट मोगा, पंजाब
2. चौ. नफेसिंह जी राठी पूर्व विधायक क्षेत्र बहादुरगढ, हरि
3. श्री वीरसेन जी मुखी कीर्तिनगर, दिल्ली
4. श्री बलजीत सिंह जी उपाध्यक्ष किसान मोर्चा भाजपा दिल्ली प्रदेश, नजफगढ़
5. आचार्य यशपाल जी कन्या गुरुकुल खरखोदा, हरि.
6. श्री हरि सिंह जी सैनी, प्रधान आर्य समाज, हिसार
7. पंडित राम दर्शन शर्मा, महावीर पार्क, बहादुरगढ़
8. श्री सत्यपाल जी वत्स काष्ठ मण्डी, बहादुरगढ़
9. श्री जयकिशन जी गहलौत, नजफगढ़, दिल्ली
10. श्री रमेश कुमार राठी, ७ विश्वा, जटवाड़ा मो, बहादुरगढ़
11. श्री जे.आर. वरमानी, गुड़गाँव, हरियाणा
12. श्रीमती नीतू गर्ग, ईशान इंस्टीट्यूट, ग्रेटर नोएडा
13. श्री रामवीर जी आर्य, सै. ६, बहादुरगढ़
14. श्री जितेन्द्र कुमार जी आर्य, सूरत, गुजरात
15. श्री राव हरिशचन्द्र जी आर्य, नागपुर
16. श्री ओमप्रकाश आर्य, आर्यसमाज कीर्तिनगर, नई दिल्ली
17. श्री देव प्रकाश जी पाहवा, राजौरी गार्डन, दिल्ली
18. श्री जयदेव जी हसीजा 'प्रेमी' वानप्रस्थी, गुड़गांव
19. स्वामी वेदरक्षानन्द जी सरस्वती, आर्ष गुरुकुल कालवा
20. रविन्द्र कुमार आर्य-सैक्टर ६, बहादुरगढ़
21. नेहा भटनागर, सुपुत्र सुरेश भटनागर, तिलकनगर, फिरोजाबाद
22. अमित कौशिक, सु श्री महावरी कौशिक, मलिक कॉलोनी, सोनीपत
23. सरस्वती सुपुत्र वे.के. ठाकुर, न्यू सिया लाईन लखनऊ (उ.प्र.)
24. दीपक कुमार, सुपुत्र श्री भगवान् गिरि, बोकारो, झारखण्ड
25. कृष्णा दियोरी भेली, सु श्री शैलेन्द्र नाथ दियोरी, गोहाटी, असम
26. रवि कुमार जायसवाल, सुपुत्र श्री आर.एस. जायसवाल, गोपालगंज, बिहार
27. श्री सुरेश कौशिक, मॉडल टाउन, बहादुरगढ़
28. श्री गौरव, सु. श्री कामेश्वर प्रसाद, हनुमान नगर, कंकड़बाग, पटना
29. श्री परमजीत सिंह, सुपुत्र सरदार गुरनाम सिंह, दसुआ (पंजाब)
30. श्री राजेन्द्र प्रसाद सिंघल, शक्ति विहार, दिल्ली
31. श्री प्रेम कुमार जी गर्ग, दनकौर (उ.प्र.)
32. श्री ओमप्रकाश जी अग्रवाल, ईसान इन्स्टीट्यूट, नोएडा
33. कु. शिखा सिंह, सु. श्री सीपीसिंह, सुभाष नगर, हरदोई उ.प्र
34. कु. नेहाराज, सु. श्री राजन कुमार, बाकरगंज पटना (बिहार)
35. कु. गितिका, सु. श्री प्रमोद शुक्ला, आजादनगर हरदोई उ.प्र.
36. कु विदिशा, सु श्री राजकमल रस्तोगी, इन्दिरा चौक बदायूं उ.प्र
37. श्री मनोज, सु. श्री जे.एस.विस्ट, पूर्वी ग्रेटर कैलाश दिल्ली
38. कु. सविता, सु. रमेश चन्द्र यादव, रानीबाजार, सहारनपुर
39. श्री हर्ष कुमार भनवाला, सैक्टर-1, रोहतक (हरि.)
40. श्री ईश्वरसिंह यादव, गुड़गांव, हरियाणा
41. श्री वेदपाल जी आर्य, महावीर पार्क, बहादुरगढ़
42. श्री बलवान सिंह सोलंकी, शक्तिनगर, बहादुरगढ़
43. मा. हरिश्चन्द्र जी आर्य, टीकरी कलां, दिल्ली
44. श्री सोहनलाल जी मनचन्दा, शिवाजीनगर, गुड़गांव
45. श्री स्वदीप दास गुप्ता, जमशेदपुर, झारखण्ड
46. श्री अजयभान सिंह यादव, कानपुर, उ.प्र.
47. श्री अजयभान यादव, कानपुर सिटी, उ.प्र.
48. चौ. हरनाथ सिंह जी राघव, खेड़ला, गुड़गांव
49. श्री देवीदयाल जी गर्ग, पंजाबीबाग, नई दिल्ली
50. श्री आर.के. बेरवाल, रोहिणी, नई दिल्ली
51. पं. नत्थूराम जी शर्मा, गुरुनानक कॉलोनी बहादुरगढ़
52. श्री आर.के. सैनी, हसनगढ़, रोहतक
53. श्री राजकुमार अग्रवाल, मुल्तान नगर, दिल्ली
54. श्रीमती कुसुमलता गर्ग, दिलशाद गार्डन, दिल्ली
55. श्री बलवान सिंह, साल्हावास, झज्जर
56. श्री अजीत चौहान, डिफेंस कॉलोनी, नई दिल्ली
57. यज्ञ समिति झज्जर
58. श्री उम्मेद सिंह डरोलिया, काठमण्डी, बहादुरगढ़
59. श्री अम्बरीश झाम्ब, गुड़गाँव, हरियाणा
60. श्री गणेश दास एवं श्रीमती गरिमा गोयल, नया बाजार,दिल्ली
61. श्री राजेश आर्य, शिवाजी नगर, गुडगांव
62. मास्टर प्रहलाद सिंह गुप्ता, रोशन पुरा,गुडगांव, (हरियाणा)
63. श्री राजेश जी जून, उपचेयरमैन, जिला परिषद झज्जर
64. श्री अनिल जी मलिक, पूर्व उपाध्यक्ष, टीचर कॉलोनी बहादुरगढ़
65. द शिव टर्बो ट्रक यूनियन, बादली रोड, बहादुरगढ़
66. श्री राधेश्याम आर्य, रामनगर, त्रिनगर, दिल्ली
67. सुपरिटेन्डैन्ट नाहर सिंह, बिजवासन, दिल्ली
68. श्री राम प्रकाश गुप्ता व श्री राजेन्द्र प्रसाद गुप्ता, नजफगढ़

thearyasamaj.org

हंसो और हंसाओ

- रवि शास्त्री, आत्मशुद्धि आश्रम

- मंडप में दुल्हन को सिर झुकाये बैठा देख एक बुजुर्ग महिला बोली-वह कितनी सुशील और संस्कारी है जब से बैठी है सिर नीचे किये हुए है एक बार भी नजरें उठाकर नहीं देखा।
  पीछे से पप्पु बोला-माँ जी दुल्हन फेसबुक पर ऑनलाईन है।
- एक सरदार ने घर का दरवाजा उखाड़ा और कंधे पर रखकर बाजार में गया।
  एक आदमी ने पुछा-पाजी क्या दरवाजा बेचना है?
  सरदार-नहीं ताला खुलवाना है, चाबी गुम हो गई है?
  आदमी-अगर घर में चोर घुस गये तो
  सरदार-अन्दर जायेंगे कैसे, अन्दर जाने का दरवाजा तो मेरे पास है।
- पत्नी-बेलेन्टाईन डे पर मुझे रिंग दोगे ना?
  पति-1 या 2
  पत्नी-तुम्हारी मर्जी
  पति-मगर ये बताओं रिंग मोबाईल पर दू या लैडलाईन पर।
- हरियाणा पुलिस का हवलदार-पेन हाथ में लेकर, भाई चालान बनाना पड़ेगा के नाम है तेरा?
  फोरनर-Wilhelin Volvcorgrinzkry Toyati!!!
  हवल्दार-इबकै छोड़ रहा हूं फेर ना फंस जाईये।
- हवलदार-इंस्पेक्टर साहब मैं इस घर के बाहर खड़ा हूँ यहां एक महिला ने अपने पति को गोली मार दी है....
  इंस्पेक्टर-पूरी वारदात का ब्यौरा दो....
  हवलदार-हूजूर आज इनकी कामवाली नहीं आई थी महिला ने खुद पोंछा लगाया था और पति ने गीले फर्श में पैर छाप दिये। गुस्से में महिला ने उसे गोली मार दी। अब मेरे लिए क्या काम है?
  इंस्पेक्टर- बाहर खड़ा क्या कर रहा है-अंदर जाकर महिला को गिरफ्तार कर ले।
  हवलदार-पर हुजुर फर्श अभी तक गीला है।

चुनौती

- अशोक सिसोदिया

ये तुंग शिखर हिम आच्छादित,
नहीं कंटक बन सकते मग में,
हो स्वयं काल ही चाहे अड़ा,
होगा तो वही जो है मन में।

कब रोकी है विपदाओं ने,
वीरों की राहें अविरामी,
वह मत्त-मतंगो की भांति,
होते हैं निज पथ अनुगामी।

माता का शीश मुकुट वीरो,
कुछ संकट अनुभव करता है,
वह नीच कुटिल कामी चीनी,
यह हरने का दम भरता है।

माता के संकट हरने को,
अपने ऋण पूरे करने को,
लो शस्त्र उठा कर में अपने,
वीरो प्रण पूरे करने को।

हैं अभी कहीं वो लाल नहीं,
सारे के सारे पीले हैं,
लाली तो अन्तिम वस्तु है,
करना पीले से नीले हैं।

होता है पूर्ण निज जीवन में,
नर विपदाओं से घिस-घिसकर,
मेंहदी भी देती है लाली,
दो पाषाणों में पिस-पिस कर।

पल नहीं सोचने का वीरो,
अब बनना है हमको पत्थर,
और समझ चीनियों को मेंहदी,
अब रख देना है घिस-घिसकर।

- उत्तरी सिक्किम की एक पोस्ट

thearyasamaj.org

धैर्य से कठिनाईयों पर विजय

-सत्यानन्द आर्य

धृति अर्थात् धीरज यह गुणों का ऐसा भण्डार है ज़िसकी साधना से मनुष्य का मनुष्य निखरने लगता है। शरीर को स्वस्थ बनाये रखने के लिए, परिवार में सुख शांति के लिए तथा देश और जाति को संगठित रखने में यह रामबाण औषधि है। इस औषधि के कारण मनुष्य गम्भीर से गम्भीर विपत्तियों में घबराता नहीं। बल्कि विपत्तियों का सामना करने की क्षमता बनी रहती है। ऐसे व्यक्ति को धैर्यवान कहा जाता है। धैर्यवान पुरुष कभी अशांत और उतावले नहीं होते हैं। इसीलिए उनका मन शांत बना रहता है।

धैर्य की परीक्षा कठिनाईयों के बीच हुआ करती हैं अपने प्रिय जन के बिछुड़ने से धैर्य का बांध जब टूटता है तब बड़े-बड़े ज्ञानी और विद्वान भी इस गुण को सम्मान नहीं पाते हैं। कर्मशील व्यक्ति को धैर्य की आवश्यकता होती है। जो कर्महीन है निठल्ले हैं भीरू और निराशावादी हैं उनको भला धैर्य से क्या लाभ? व्यक्ति को हानि लाभ तभी तो होगा जब वह कर्मक्षेत्र में उपस्थित रहेगे। जो कुछ कर्तव्य कर्म करेगा इसीलिए कर्तव्य के साथ धैर्य को आदत बना लेने वाला हर हाल में प्रसन्नचित रहता है। प्रसन्नचित रहने वाला अपने आप को, घर को तथा समाज को सही नेतृत्व दे सकता है। महाभारत के युद्ध के दौरान में प्रसन्नचित श्रीकृष्ण ने निराशा से ग्रस्त अर्जुन को स्थिति प्रज्ञ की शिक्षा देकर जो महान सफलता की ओर अग्रसर किया इस पर यदि चिन्तन करें तो ''धृति'' का लक्षण मुख्य है। उस घृतिके मुख्य सूत्रधार हैं योगीराज श्रीकृष्ण। धैर्यवान व्यक्ति कभी भावावेश में नहीं आते हैं। धैर्यवान नेता अपने अनुचरों को उत्तेजित नहीं होने देते हैं। इस युग के महान सन्त स्वामी दयानन्द सरस्वती के जीवन की घटना है। स्वामी जी महाराज पूना में ठरे थे प्रतिदिन प्रवचन होते थे। हजारों लोग उनको सुनने के लिए आते थे पाखण्ड के विरूद्ध उनकी तर्क शैली तथा प्रवचन शैली जन मानस को प्रभावित किये बिना नहीं रहती। सैकड़ों व्यक्ति भक्त बन गए। पाखण्ड खण्डन ने जिनकी रोजी-रोटी को हानि होने लगी उनको भला यह सब कैसे सहन होता। विद्वता के बल पर शास्त्रार्थ करने का साहस न बटोर सके। एक युक्ति उन्होंने निकाली। एक गद्दे पर एक व्यक्ति को स्वामी जी का कार्टून बनाकर जूतों की माला डालकर बैठाया। जुलूस बनाकर नगर भर में स्वामी दयानन्द हार गये का शंखनाद करने लगे। स्वामी जी के भक्तों ने भी देखा उस शोभा यात्रा को। किंकर्त्तव्य विमूढ़ होकर स्वामी जी के डेरे पर पहुंचे। पूरा दृश्य कह सुनाया तथा प्रत्युत्त में कुछ कर गुजरने की आज्ञा चाही। स्वामी जी हंसे। शांत होकर बैठने को कहा फिर बोले देखो असली दयानन्द तुम्हारे सामने बैठा है। नगर में किसी नकली दयानन्द को घुमाया जा रहा है। तुम्हें उनसे क्या लेना? नकली की जो दशा होती है वही तो हो रही है।

एक सही सन्त के वाक्यों ने सचमुच सभी को शांत कर दिया। विश्व के महान वैज्ञानिक अलबर्ट आइन्सटीन से किसी ने उनके महान बनने का कारण पूछा आईन्सटीन ने बताया, मैं स्कूल में पढ़ते समय इतना बुदधू था कि विद्यार्थी मुझे चिढ़ाया करते थे। कई बच्चे तो मेरी कमीज के पीछे बुद्धू लिख दिया करते थे। अध्यापकों ने भी कभी मेरा उत्साह नहीं बढ़ाया, बल्कि व्यंग और रोष में बोलते कि तू सात जन्म में भी गणित नहीं सीख सकता।

किन्तु मैंने अपने को कभी अज्ञानी नहीं समझा। रात दिन प्रयत्न करता रहा। शरीर थक जाता परन्तु मेरा संकल्प कमजोर न पड़ता। विपरीत स्थिति में धैर्य धारण कर चलता रहा और उसी के कारण मैं अपने लक्ष्य तक पहुंच पाया।

स्वामी विवेकानन्द जी एक बार एक सरोवर के किनारे चले जा रहे थे वे किसी गम्भीर चिन्तन में उलझे हुए थे। तभी सामने से बन्दरों का एक झुण्ड उनकी तरफ बढ़ा। जब वे बन्दर थोड़ी ही दूरी पर रह गये तो अचानक विवेकानन्द जी का ध्यान टूटा और देखा कि लाल मुह के विशाल विकराल बन्दर उनसे अधिक दूर नहीं थे। उन्हें देख विवेकानन्द जी घबरा गये और पलटकर भागने लगे। बन्दर भी उनके पीछे भागे। विवेकानन्द जी ने सोचा बस अब प्राण गये।

तभी किसी अनुभवी बुजुर्ग ने जोर से कहा-वहीं रूक जाओ। धैर्य रखो पीछे पलटकर बन्दरों के सामने सीधे खड़े हो जाओ। घबराहट न दिखाकर धीरज दिखाओ।

thearyasamaj.org

विवेकानन्द जी वहीं पर रूक गये और पीछे पलटकर बन्दरों के सामने खड़े हो गये। बुजुर्ग की राय ने जादू सा काम किया इसके बाद जैसे चमत्कार हुआ वे सारे बन्दर वहीं पर रूक गये और विवेकानन्द जी को निडर खड़ा पाकर पीछे वापस झुक गये।

स्वामी विवेकानन्द जी ने उसी दिन अपने भाषण में इस घटना का उल्लेख कर कहा उन बन्दरों से डरकर भागता रहता तो मैं बचता नहीं। बन्दर मुझे मार डालते। धैर्यपूर्वक मैं उनके सामने खड़ा हो गया वे चुपचाप भाग गये । इसी प्रकार समस्याओं व संकटों से पलायन करने से वे दूर नहीं होगी। धीरज धारण करने से ही संकट स्वतः दूर हो जाते हैं।

इसी तरह महाभारत में धर्मराज युधिष्ठिर का जीवन भी दिव्य धैर्य की झांकी है।

जयद्रथ के द्वारा द्रौपदी के अपहरण के प्रयास के कारण धर्मराज युधिष्ठिर अत्यन्त दुःखी थें इसलिए काम्यवन को छोड़कर वे पुनः द्रौपदी और अपने चारों बंधुओं के साथ द्वैतवन में आकर टिके थे। तभी एक घटना हुई। एक मृग के सींग में एक ब्राह्मण के यज्ञ के उपकरण उलझ गये, मृग उन्हें लेकर भागा। ब्राह्मण के निवेदन पर पाण्डवों ने उसका पीछा किया, पर वह मिला नहीं। अत्यन्त थके मांदे पाण्डव क्षुधा, तृषा से पीड़ित एक वृक्ष की छाया में बैठे। उस समय भीम, अर्जुन, नकुल के मुख से अपनी दुर्दशा के बारे में सहज दुःखोदगार निकले। परोक्षतः सबने दुःखी मन से रोष व्यक्त किया।

यद्यपि धर्मराज तनिक भी विचलित नहीं हुए। उन्होंने नकुल से कहा कि पेड़ पर चढ़कर कहीं पानी हो तो देखो। नकुल को एक सुन्दर सरोवर दिखायी दिया। वह तुरन्त तूणीर लेकर पानी लेने गया। बड़ी देर तक न लौटने पर उसे ढूँढ़ने सहदेव गया इसी प्रकार अर्जुन ओर भीम भी गये। चारों जब नहीं लौटे तो चिन्तित होकर स्वयं युधिष्ठिर गये।

अनेक सुन्दर वनस्पतियों से सुशोभित जिनका परिसर है, ऐसे उस रम्य सरोवर के पास आकर धर्मराज आश्चर्यचकित हुए, इन्द्र के समान पराक्रमी उनके चारों भाई मृत पड़े थे। अत्यन्त दुःख से उनकी मृत्यु का कारण उन्होंने सोचा और फिर वे पानी पीने सरोवर में जाने लगे।

तभी उन्हें यक्ष की वाणी सुनाई दी। मेरी अवज्ञा करने के कारण ही तुम्हारे भाईयों की यह दशा हुई है। तुम भी मेरे प्रश्नों का उत्तर दिये बिना जल पीओगे तो तुम्हारी भी वही गति होगी। धर्मराज रूक गये। यक्ष ने एक सौ इक्कीस गहन प्रश्न पूछे और धर्मराज ने उस दुखित अवस्था में भी सबके समुचित उत्तर दिये।

उत्तरों में प्रसन्न यक्ष ने कहा- तुम्हारे इन भाईयों में से जिसे चाहो एक को जीवित कर लो। उस पर धर्मराज ने नकुल को जिलाने की इच्छा प्रकट की। यक्ष बोला अरे यह भीमसैन तेरा अत्यन्त प्यारा है और अर्जुन तो तुम सबका सहारा है। तुम अपने सौतेले भाई को क्यों जिलाना चाहते हो?

उस पर युधिष्ठिर ने कहा यदि हम धर्म का घात करें तो धर्म हमारा घात करेगा। यदि हम धर्म की रक्षा करेंगे तो धर्म हमारी रक्षा करेगा। मैं धर्म का त्याग करना नहीं चाहता हूं पक्षपात अधर्म है। लोग मुझे धर्मशील मानते हैं। मैं धर्म से च्युत नहीं होऊंगा। मेरे पिता की दो भार्याएं कुन्ती और माद्री। दोनों पुत्रवती रहें। मेरे लिए जैसी कुन्ती वैसी माद्री दोनों में कोई भेद नहीं। कुन्ती का मैं हूं इसलिए हे यज्ञ, नकुल को जीवित करो।

किसी परिस्थिति में शांत रहकर विचार करने और स्वधर्म से स्खलित न होने की जो आसाधारण शक्ति धर्मराज युधिष्ठिर में भी थी। धृति के गुण से वे परिपूर्ण थे।

किसी काम को करने से पूर्व धैर्यवान व्यक्ति उसके सभी पहलुओं पर विचार करके आगे बढ़ता है और उसके प्रति समर्पित होकर पुरुषार्थ करता है। पूर्ण पुरुषार्थ के उपरान्त मिलने वाले फल को सहज स्वभाव से स्वीकार करता है। किसी काम के करने में यह आवश्यक नहीं कि सफलता मिल जाए असफलता का भी मुंह देखना पड़ता है। दोनों परिस्थितियों में सम्यक् बना रहे उसे धैर्यवान कहते हैं। जो यश और हानि और लाभ को तथा जीवन और मृत्यु को आसानी से जी सके। वही धैर्यवान कठिन से कठिन परिस्थितियों में सफल हो जाता है।

वह पथ क्या, पथिक कुशलता क्या,
जब बिछे राह में शूल न हों।
नाविक की धैर्य परीक्षा क्या जब धारा ही
प्रतिकूल न हो॥

- 7/78, पंजाबीबाग, नई दिल्ली

thearyasamaj.org

नवरात्रों में व्रत या उपवास-एक वैज्ञानिक चिंतन

– गंगाशरण आर्य

नवरात्र भारतवर्ष में एक धार्मिक अनुष्ठान के रूप में प्रचलित है। यह अनुष्ठान वर्ष में दो बार किया जाता है एक तो चैत्र मास में, दूसरा-अश्विन मास में। ये दोनों ही महीने ऐसे हैं जिनमें फसल काटकर घरों में लाई जाती है, चैत्र मास में गेहूं और अश्विन मास में चावल। क्योंकि इन महीनों में नया अन्न गृह में आता है तो उसके ग्रहण करने से शरीर में किसी प्रकार का विकार उत्पन्न न हो इसलिए पहले शरीर की शुद्धि उपवास आदि के माध्यम से कर ली जाती है। आपने सुना भी होगा कि नया गेहुँ आते ही एकदम प्रयोग नहीं करना चाहिए क्योंकि ऐसा करने से दस्त इत्यादि हो जाते है। आज ही नहीं आदिकाल से ही भारतवर्ष में लंघन (व्रत या उपवास) आदि ऋतु सन्धि में होने वाले रोगों के उपचार हेतु एक अचूक ब्रह्मास्त्र के रूप में प्रयोग किया जाता रहा है इसलिए व्रत (कल्प), उपवास, प्रातः जागरण आदि हमारे मनीषियों द्वारा हमारे त्योहारों के रूप में जोड़ दिया गया ताकि हम लोग व हमारी आने वाली पीढ़ियाँ हानिकारक औषधियों के मिथ्योपचार से बच सकें।

प्राकृतिक या नैसर्गिक उपचार पद्धति में 'नौ दिन' का उपवास शरीर शोधन के लिए उपयुक्त माना जाता है। यहाँ तक कि 'उपनिषद्' में तो स्पष्ट लिखा है कि मनुष्य 15 से 20 दिनों तक निराहर रह सकता है यदि पानी का भरपूर मात्रा में प्रयोग करें। नौ दिनों का उपवास 'ऋतु परिवर्तनं काल' में करने से शरीर का शोधन भली प्रकार से हो जाता है। इन दिनों में गेहूँ, जौ आदि कृषि प्रधान देश होने से बीज परीक्षण के लिए मिट्टी आदि के कसोरे, कुंडी आदि में बोया जाता है और वैसे भी गेहूँ के ज्वारे का रस पीने से हमारे शरीर की जीवनी शक्ति बढ़ती है इसे पीने से भयंकर से भयंकर रोग से मुक्ति पाई जा सकती है। नवरात्रि ऐसा अनुष्ठान है, जो मानव के तन व मन तथा गुह्य द्वारा के असन्तुलन और अशुद्धियों को दूर करता है। शरीर में नौ द्वारा हैं। मूलाधार से लेकर ब्रह्मरन्ध्र तक इड़ा, पिंगला, सुषुम्ना नाड़ियों के रूप में गंगा, यमुना, सरस्वती बह रही हैं और इन नौ द्वारा को स्वच्छ तथा पवित्र कर रही हैं। जब यह आत्मा इस शरीर से निकल जाती है, तो यह शरीर निष्प्राण हो जाता है। तभी इसको अपवित्र माना जाता है। यह शरीर उसी समय तक पवित्र है जब तक नौ द्वारों वाले इस शरीर में आत्मा का निवास है।

वैदिक साहित्य में नौ रात्रियों का सुन्दर वर्णन है। रात्रि का अर्थ है अंधकार! अंधकार से प्रकाश में लाने को ही जागरण कहा जाता है। जागरण का यहां अभिप्राय "मानव के जागरूक होने से है और जो व्यक्ति जागरूक रहता है उसके यहां रात्रि का कोई मतलब नहीं अर्थात् रात्रि नाम की कोई वस्तु उसके पास नहीं होती। रात्रि तो उनके यहां होती है जो जागरूक रहकर जीवन यापन नहीं करते । आज धन का नाश करने तथा लोगों की नींद हराम करने वाले पाखण्डियों को बुलाकर इस गाने-बजाने के कार्यक्रम को गली मोहल्ले में दूर-दूर तक सुनाने के लिए ध्वनि विस्तारकों (हाईवोल्टेज स्पीकर बाक्सों) का प्रयोग किया जाता है। अन्ध परम्परा की अन्धी दौड़ में आज जिधर देखो नगरों में, गांवो में अपने आपको धार्मिक एवं भक्त के रूप में प्रतिष्ठित करने के लिए नित्य प्रति रातभर जाग-जागकर अष्टभुजा वाली माता दुर्गा के जागरण करने करवाने की एक प्रथा सी चल पड़ी है जिसमें एक कपोल कल्पित देवी अनऐतिहासिक तथा ऐसे ही कपोल कल्पित अन्य देवताओं के चित्र सजाकर उनके आगे धूप-दीप जला दिए जाते हैं तथा कुछ पेशेवर और रात भर चीखने-चिल्लाने वाले लोग किराए पर बुला लिए जाते है। ये किराए के लोग फिल्मी धुनों पर बनाए गाने चिंघाड़-चिघांडकर गाते हैं। इनके सामने अनेक भोले भाले नर-नारी और बालक भ्रमवश अन्धविश्वास में फंसे हुए किसी शक्ति के आगमन की प्रतीक्षा में अन्न भक्ति भावना में बैठे झूमते रहते है। एक तरफ तो इन त्योहारों पर 7 या 9 कन्याओं को जिमाया जाता है अर्थात् उन्हें बहुत सम्मान दिया जाता है दूसरी तरफ भारत में इनके साथ दुर्व्यवहार, बलात्कार, आदि कर्मो का दिग्दर्शन नित्य प्रति टेलिविजन या अखबारों आदि में होता है। क्या

thearyasamaj.org

देवी दुर्गा के नौ रूपों की पूजा करने वाले हमारे देश में देवी के इन्हीं अलग-अलग रूपों की प्रतीक हमारी बहन-बेटियां इसी प्रकार अपना सम्मान खोती रहेगी? इससे ऐसा प्रतीत होता है कि हिन्दुओं के इस प्रकार के अनुष्ठानों का उनके चरित्र से कुछ लेना देना नहीं है। इसलिए हमें व्रत या उपवास के वास्तविक अर्थ व महत्व को भली प्रकार समझना चाहिए तभी हमारे त्योहार शिक्षाप्रद हो सकते है। इन दिनों किए गए उपवास में सात्विक भोजन का प्रयोग करने से हमारे भीतर की दुर्भावनाएं समाप्त हो जाती है। ये पत्थर की मूर्तियां देवियां नहीं है, हमें इनकी पूजा कभी नहीं करनी चाहिए। बल्कि परमात्मा की बनाई हुई सर्वोतम कृति हमारी माता, बहन और पत्नी व बेटी हैं यही तो असली देवियां है। हमें इनकी पूजा अर्थात् यथोचित सत्कार करना चाहिए और इन दिनों जागरण करने वाली मण्डली को भी स्थान-स्थान पर जाकर जनता को अपने भजनों व प्रवचन आदि के माध्यम से यही निर्देश देना चाहिए लेकिन जागरण करने कराने वाले अधिकतर धर्मतत्व से अनभिज्ञ पाए जाते है। वे जागरण के बीच-बीच में पण्डाल से निकल कर छुप-छुपकर बीड़ी, सिगरेट, शराब आदि पीते है व जागरण के समय मनघडंत कथाएं सुनाकर लोगों से खूब धन एठते हैं। क्या इस प्रकार के रात्रि जागरण उचित है? स्वयं ही विचार करें। श्रीकृष्ण जी गीता में उपेदश देते हुए अर्जुन को कहते हैं "न चाति स्वप्न शीलस्य न जाग्रतो नैव चार्जुन" गीता अ.6/16।। अर्थात हे अर्जुन योग न ज्यादा सोने वाले का सिद्ध होता है और न अतिजागने वाले का अहा: यथोचित जागना चाहिए तथोचित सोना चाहिए। वैसे आयुर्वेद की दृष्टि से रात में जागना स्वास्थ्य के लिए हानिकारक है। प्रिय बन्धुओं! जागरण से हमारा कोई बैर नहीं हैं, जागरण हो पर वह वेद के निर्देशानुसार हो। वेद कहता है-वयं राष्ट्र जागृयाम पुरोहिता: (यजुर्वेद अ.-9 मन्त्र 23) अर्थात् सत्य क्रिया के साथ सबके हितकारी हम लोग राज्य में निरन्तर आलस्य छोड़कर जागते रहें। जागना है तो ऐसे जागना चाहिए। अपने राष्ट्र में चारों ओर से सावधान रहना है अन्दर और बाहर संदेश को क्षति पहुंचाने वालो से सावधान रहना है।

जहां तक मां की पूजा का सवाल है उसका नवरात्रों से कोई संबंध नहीं क्योंकि मां तो नवरात्रियों में ही क्यों सर्व समय पूजनीय है क्योंकि वह अपने गर्भस्थल में नवमास तक हमें रखकर नवजीवन प्रदान करती है। 'माता निर्माता भवति', अर्थात् माता निर्माता होती है और माँ के गर्भस्थल में रहने के जो ये नौ मास हैं वे रात्रि के रूप में ही हैं। वहां पर अंधकार रहता है। वहां रूद्र रमण करता है तथा मूत्रों की मलिनता रहती है, उसमें आत्मा वास करता है और शरीर का निर्माण होता है। वहां भयंकर अंधकार है और मां ही नवमास पूरे होने पर हमें इस अंधकार से बाहर निकालती है इसलिए मां पूजनीय है उसकी हमें सदैव श्रद्धा से तृप्ति करनी चाहिए और जो मनुष्य नौ द्वारों से जागरूक रहकर उनमें अशुद्धता नहीं आने देता वह मानव नवमास के इस गहन अंधकार में नहीं जाता, जहां मानव का महाकष्टमय जीवन होता है।

नवरात्रि के इस पर्व को स्वास्थ्य पर्व भी कहा जाता है जिस प्रकार नौमास नौ दिन के गर्भ के प्रसव के पश्चात माता नौ, दस दिन तक विश्राम करती है उसी प्रकार धरती माता जिसके गर्भ से परमात्मा की संतान ये सृष्टि उत्पन्न होती है उसकी गति भी धीमी होती है चैत्र शुक्ल प्रतिपदा को सृष्टि की उत्पत्ति का प्रथम दिवस माना जाता है और प्रतिपदा से अष्टमी तक प्रकृति की गति चैत्र मास में शान्त रहती है। इसलिए इसको गति देने के लिए तथा वायुमण्डल के शोधन करने के लिए प्रत्येक मानव यज्ञमयी ज्योति को जागरूक करता है। यह ज्योति शान्त नहीं रहनी चाहिए। इसका अनुष्ठान व्रती रहकर अर्थात् संकल्प के द्वारा जब यज्ञपति, होता जन, उदगाता जन आदि करते हैं तो उस समय प्रकृति माँ वसुन्धरा बनकर अपने प्यारे पुत्रों को इच्छानुसार फल दिया करती है। जब प्रत्येक मानव याज्ञिक बनकर अनुष्ठान करने लगता है तो उसकी प्रवृतियां ही उसका निर्माण करती हैं तथा वैचारिक प्रदूषण भी वायुमण्डल से समाप्त हो जाता है। वायुमण्डल जितना परिष्कृत (शुद्ध) होगा उतनी ही भूमि पवित्र और भू गर्भ में पल्लवति नाना प्रकार के अन्न, औषधियां आदि सब परिष्कृत हो जाते हैं इसलिए ये अनुष्ठान किया जाता है। लेकिन आज इस अनुष्ठान का स्वरूप ही पेटार्थी ब्राह्मणों ने परिवर्तित कर दिया। अपनी मां के सेवा, सुश्रुषा छोड़ उसके

thearyasamaj.org

बच्चे आज पेटार्थी ब्राह्मणों द्वारा कथित मनघड़त देवियों की पूजा अनुष्ठान में लगे है उसके लिए नौ दिन तक भुखे रहकर उपवास (व्रत) करते है यही मायनों में तो आज उपवास भी नहीं करते क्योंकि उन्हें भय सताने लगता है कि भोजन नहीं करेंगे तो रोगी ही जाएंगे, दुर्बल हो जाएंगे, यह सोचकर लोगों ने इन दिनों में खाते-पीते रहने के लिए अनेक उपाय ढूंढ लिए जिनके लिए सबसे अधिक दोषी समाज का सम्पन्न वर्ग है जिसने विभिन्न प्रकार के फलाहारी पकवानों ने भी उनका अनुसरण कर, उन अस्वास्थ्यकर फलाहारों को अपना लिया। ''महाजनों येन गतः स पंथा।'' यह अस्वास्थ्यकर फलाहार है कुट्ठु, सिंघांड़े आदि का हलवा, पूरिया, पकौड़े, दूध को फाड़कर या खूब औटाकर बनाई जाने वाली विभिन्न मिठाईया, साबूदाने की खीर, आलू चिप्स, साबुदाना चिप्स, नमकीन साबुदाना व नारियल मूंगफली आदि मिली हुई आदि को फलाहारी पकवान का नाम देकर खाते है।। इस प्रकार वे व्रत के स्थान पर भरत करते है अर्थात् गरिष्ठ भोजन ठूस-ठूस कर पेट में भरते है। जिसमें सहयोगी होती है बड़ी-बड़ी कम्पनियां जो व्रत की स्पेशल थालियां तैयार करती हैं, जिनकी कीमत 1100 रूपये से लकर 2 ढाई हजार तक होती है। परिणाम स्वरूप नवरात्रि के अंत तक साधारण भोजन का प्रारम्भ करने पर अनेक लोग स्वस्थ होने के बजाय रोगी हो जाते हैं। इसका दोष या तो उपवास पर डाला जाता है अथवा मौसम पर। इस प्रकार उपवास के महत्व को भूलकर बगैर सोचे समझे अनाप-शनाप खाने-पीने के पीछे पड़ गये हैं। इस प्रकार के उपवास का कोई लाभ नहीं होता। हां लाभ के स्थान पर हानि अवश्य हो जाती है। इसमें पेट की शुद्धि के स्थान पर पेट में अधिक गन्दगी भर जाती है। उपवास का महत्व इतना है कि इसके सहारे हम अपने शरीर और मन का शोधन करके ऐहिक तथा लौकिक जीवन का यशस्वी कर सकते है। धार्मिक एवं आयुर्वेदिक ग्रन्थों में उपवास को बहुत महत्व दिया गया है। जब शरीर रोगी है तो भोजन की जरूरत नहीं है तब भोजन नहीं लेना ही उचित है, यह प्रकृति की मांग है। पशु, पक्षी, मनष्य से अधिक समझदार होते हैं, जो कि रोगावस्था में भोजन नहीं करते। उपवास रोगी के लिए सर्व सुलभ, मितव्ययी और रामबाण चिकित्सा है जब उपवास से शरीर शुद्ध होकर निरोगी हो जाता है तब सच्ची भूख लगती है, श्वास, ताप सामान्य, जीभ साफ होती है यही उपवास तोड़ने का उचित समय है। प्राकृतिक चिकित्सा पद्धति में उपवास चिकित्सा को ब्रह्मास्त्र कहा जाता है क्योंकि जब कोई रोग किसी भी प्रकार से ठीक न होता दीखे तब रोगी को किसी अच्छे प्राकृतिक चिकित्सक की देख-रेख में उपवास कराना चाहिए अन्यथा रोगी को अनपके भोजन पर रखना चाहिए। यह रामबाण है तथा उपवास से बढ़कर दुनियां में कोई तप नहीं है। इसलिए उपवास को हम साधारण चिकित्सा न समझें, बल्कि आरोग्य लाभ आत्मिक शान्ति का साधन मानकर इसके महत्व को ठीक-ठीक समझ लेवें। उपवास दीर्घकाल तक तथा थोड़े दिनों के लिए भी किए जाते हैं। दुर्बल तथा शुष्क शरीर वाले, यक्ष्मा (टी.बी.) के रोगी, पूर्ण गर्भवती स्त्रियां, कमजोर बूढ़े व्यक्तियों को लम्बे उपवास नहीं करने चाहिए। कहने का तात्पर्य है कि सब प्रकार के रोगियों को समय और स्थिति के अनुसार, अनुभवी व्यक्ति की देख-रेख में ही उपवास करना चाहिए। उपवास करने वाले रोगी को, उपवास काल में खाद्य पदार्थो के बारे में सोचते न रहकर मन को उत्तम विचारों और सदग्रन्थों के पठन से संयम तथा शान्त रखने का प्रयत्न करना चाहिए। उपवास काल में कुछ कष्ट होते हैं क्योंकि शरीर संचित विजातीय द्रव्य को बाहर निकालने में लग जाता है, जिससे शरीर का शोधन होता है और रोग दूर होने लगते हैं। उपवास से वजन घटता है, थोड़ी दुर्बलता भी प्रतीत होती है लेकिन मानसिक उत्साह बढ़ता है और शरीर में स्फूर्ति आती है। मानव शरीर रासायनिक परिशोधनालय से अधिक महत्वपूर्ण है। अन्न पाचन में लगने वाली

आपकी सुविधा हेतु

आप आत्मशुद्धि आश्रम, बहादुरगढ़ द्वारा संचालित विभिन्न प्रकल्पों हेतु अपना पावन दान निम्नलिखित खाते में सीधा जमा कराकर पुण्य के भागी बन सकते हैं–

बैंक	नाम व खाता संख्या	बैंक कोड संख्या
इलाहाबाद बैंक, रेलवे रोड, बहादुरगढ़,झज्जर	आत्म शुद्धि आश्रम 20481946471	IFSC-A0211948

thearyasamaj.org

शक्तियां उपवास कल में शरीर शोधन में लग जाती है। सप्त धातुओं में जो विकार होते हैं बाहर निकलते हैं और शरीर का शोधन होने लगता है, जिस प्रकार किसी यन्त्र को तेल देने से वह फिर से सुचारू रूप में काम करने लगता है और उसमें कान्ति तथा स्फूर्ति आ जाती है। अतः हमें गलत तरीके से व गलत अपेक्षाओं को मन में रखकर उपवास नहीं करने चाहिए। कभी पति का नाम लेकर (करवां चौथ) तो कभी बच्चों के नाम लेकर (अहोई अष्टमी) तथा कभी देवी-देवताओं के नाम से हम उपवास करते हैं जोकि गलत है। इससे अज्ञान फैलता है। पति के नाम पर उपवास रखकर हम यह सोचते है कि ऐसा करने से मेरे पति की आयु लम्बी हो जाएगी अब बताओं उपरोक्त उपवास विषय को पढ़ने के बाद भी आप ऐसा ही कहेंगे? उपवास करने से आपका शरीर स्वस्थ होगा न कि आपके पति का तो आयु किसकी बढ़ेगी? बताईए जरा। ठीक ऐसे ही बच्चों की प्राप्ति व सुख शान्ति के लिए किये गए व्रत में हम यह सोचते हैं कि इस व्रत के करने से मुझे संतान हो जाएगी व मेरे बच्चे जीवित है वे सुख से रहेंगे लेकिन गलत तरीके से किए गए उपवास से लाभ की बजाए हानि हो जाएगी व अन्य बच्चों का स्वास्थ्य तो उन्हीं के द्वारा किए गए उपवास से ही ठीक होवेगा न कि आपके द्वारा किए व्रत से। ठीक ऐसे ही देवी-देवताओं के नाम पर रखे गए विभिन्न उपवास करने से हमें ऐसा लगता है कि अगर हमने अमुक व्रत या उपवास नहीं किया तो अमुक देवी या देवता अप्रसन्न हो जाएगा और पता नहीं किस-किस तरह की विपत्ति हमारे घर पर आन पड़े। इस प्रकार के भाव रखकर, डर से ही यदि उपवास करेंगे तो उसका कोई लाभ होने वाला नहीं। वैसे भी उपवास का देवी-देवताओं से कोई लेना देनानहीं। जहां तक रही पूजा अर्चना की बात तो मेरी धर्मपत्नी की आंखों देखी घटना बताता हूं। मेरी धर्मपत्नी की बड़ी बहन की सहेली ने एक बेटे को जन्म दिया जिसका शरीर बन्दर के जैसा था उन्होंने उस बच्चे को मरवा दिया था। जरा विचार करे हमने भी तो बन्दर के जैसा एक भगवान बना रखा है तो क्यों न उसे भी भगवान समझकर उसे तहे दिल से स्वीकार करेंगे? क्या उसे अप्राकृतिक नहीं समझेंगे? अपना माथा नहीं पीटेंगे कि हमारे ही घर में ऐसी बच्ची ने क्यों जन्म लिया? वास्तव में ये सब पाखण्ड है और वे लोग इसे बढ़ावा अधिक देते है जो इससे सम्बन्धित सामान का व्यवसाय करते हैं। त्योहारों में पाखण्ड केवल आज व्यवसायिकरण के कारण बढ़ता जा रहा है और मीडिया जो समाज का आईना बनकर काम करता था आज बाजारीकरण का रूप धारण कर पाखण्ड व अन्धविश्वास की जड़ों में पानी डालकर आग में घी डालने का काम कर रहा है। अंत में पाठकों से अनरोध है कि उपरोक्त जो भी मानव समाज के हित के लिए उपवास का ठीक-ठीक रूप बताने का लघु प्रयास किया है उसको निष्पक्ष भाव से समझने का प्रयास का पूरा-पूरा लाभ उठाएंगे व पाखण्ड का त्याग कर अपने त्योहारों से शिक्षा लेकर अपने जीवन का ऑकलन कर सुधार करेंगे।

– चरित्र निर्माण मण्डल, सैनी मोहल्ला, ग्राम-शाहबाद, मोहम्मद पुर, नई दिल्ली-61, मो 9871644195

हार नहीं होती

– हरिवंश राय बच्चन

लहरों से डरकर नौका पार नहीं होती
कोशिश करने वालों की हार नहीं होती

नन्हीं चींटी जब दाना लेकर चलती है
चढ़ती दीवारों पर सौ बार फिसलती है।
मन का विश्वास रगों में साहस भरता है
चढ़कर गिरना, गिरकर चढ़ना न अखरता है
आखिर उसकी मेहनत बेकार नहीं होती
कोशिश करने वालों की हार नहीं होती

डुबकियां सिंधु में गोताखोर लगाता है
जा-जाकर खाली हाथ लौटर कर आता है
मिलते न सहज ही मोती गहरे पानी में,
बढ़ता दूना उत्साह इसी हैरानी में,
मुट्ठी उसकी खाली हर बार नहीं होती
कोशिश करने वालों की हार नहीं होती

असफलता एक चुनौती है स्वीकार करो
क्या कमी रह गयी, देखो और सुधार करो
जब तक न सफल हो नींद चैन की त्यागो तुम
संघर्षो का मैदान छोड़ मत भागो तुम
कुछ किये बिना ही जय-जयकार नहीं होती

thearyasamaj.org

पाकिस्तान में अल्पसंख्यकों की दशा

- शैलेन्द्र जौहरी, एडवोकेट

(1) इसके प्रथम गर्वनर जिन्नर ने ऐलान किया कि पाकिस्तान में अल्पसंख्यक द्वितीय श्रेणी के नागरिक माने जाएंगे और उन्हें वोट देने का अधिकार नहीं होगा।

(2) यहां हिन्दू, सिख, ईसाई, कादियानी अल्प संख्यक माने गए हैं। इनका प्रतिशत केवल 4 ही है।

(3) शिया मुस्लिम 20 प्रतिशत हैं। सुन्नी मुस्लिमों के संगठन इन्हें भी अल्प संख्यक घोषित कराना चाहते हैं।

(4) आतंकवादी संगठनों के कार्यकर्त्ता अल्पसंख्यकों को तथा शियाओं को भिन्न 2 तरीकों से कष्ट पहुंचाते हैं और इस प्रयास में रहते हैं कि ये भी सुन्नी मुस्लिम बन जाएं।

(5) पाकिस्तान संयुक्त राष्ट्र संघ और राष्ट्रमण्डल का सदस्य है। अतः उसे अन्तर्राष्ट्रीय नियमों-कानूनों और परम्पराओं का भी पालन करना होता है।

(6) मजबूरी में उसने चारों विधानसभाओं और राष्ट्रीय असेम्बली में कुछ सीटें अल्पसंख्यकों के लिए भी रखी हैं और राष्ट्रीय मानवाधिकार आयोग भी बना रखा है।

(7) अगस्त 1947 में मुस्लिम नेताओं ने लाहौर के बाल्मीकियों से कहा था कि वे भारत में नहीं आए बल्कि लाहौर में ही रहे ताकि लाहौर नगर की सफाई-कूड़ा उठाना, गन्दगी उठाने का कार्य भली प्रकार चलता रहे।

(8) अब उग्रवादी, दबंग, शरारती तत्व इन्हें भी तंग करने लगे हैं। मन्दिरों की खाली जमीनों, शमशान भूमि पर अवैध रूप से कब्जा कर लेते हैं। शवों को जमीन में गाड़ने पर जोर देते हैं।

(9) कई मन्दिर टूटे पड़े हैं। कई मन्दिरों पर बुलडोजर चलवा कर जमीन को समतल करके व्यापारी कम्पलैक्स, गैरज अथवा सड़के चौड़ी कर दी गई।

(10) दिनांक 25-30 वर्ष तक हाईकोर्ट में मुकदमा चला कि मन्दिर खोला जाए। संयोग से जज ने निर्णय दिया कि कोई भी धर्म स्थल बन्द नहीं रहेगा। अतः रावलपिंडी का मन्दिर खोल दिया गया। 4-5 दिन के बाद आंतकवादियों ने मन्दिर तोड़ दिया और मूर्तियां ध्वस्त कर दी।

(11) कराची के सबसे बड़े मन्दिर के चारों ओर 600 दुकानें किराए पर उठी हुई हैं। यहां के पुजारी इस्लामी टोपी ही पहनते हैं। सादा टोपी बाजार में उपलब्ध ही नहीं हैं। तत्कालीन राष्ट्रपति मुशर्रफ भी इस मन्दिर को बाहर से देखने गए थे।

(12) कराची में पुराना शबदाह स्थल है। मृतकों की अस्थियां घड़ो में रखी जाती हैं। 30-40 वर्षों के बाद पाकिस्तान सरकार ने 100-150 घंड़ो को भारत ले जाकर गंगा में प्रवाहित करने की आज्ञा दी।

(13) ऊंची आवाज से भजन-कीर्तन नहीं करने दिया जाता है। पूजा अर्चना किवाड़ बन्द करके धीमी आवाज से करने की अनुमति है।

(14) अपहरण, डकैती, चोरी, धर्म परिवर्तन, लड़कियों का धर्म बदल कर निकाह करा देना, धमकी देकर लूट लेना, धर्म बदलने के लिए दबाव डालना, गोहत्या, जजिया कर लेना आम बात हो गई है।

(15) हिन्दू संस्कृति के अनुसार नया मकान बनाने की अनुमति नहीं दी जाती है। अतः सादे मकान ही बनाने पड़ते हैं। हिन्दू यदि ईद, बकरीद मनाते हैं तो ही दीपावली, होली मनाने दी जाती है।

-अतिरिक्त अध्यक्ष (द्वितीय), सावरकरवाद प्रचार सभा, बुलन्दशहर, मो. 09897033358

आत्मबोध मानव जीवन को आन्तरिक रूप से ही नहीं अपितु बाह्य रूप से भी सौन्दर्यपूर्ण बनाता है और मानव जीवन का अन्तिम गौरव प्रकट होता है।

-राजहंस मैत्रेय

thearyasamaj.org

आश्रम द्वारा संचालित विविध प्रकल्पों हेतु 500/- से अधिक प्राप्त दान सूची

श्री श्यामलाल जी गुप्ता, श्यामलाल ग्रुप एण्ड सन्स रेलवे रोड काठमण्डी, बहादुरगढ़	12000/-
श्री सुकर्मपाल सुपुत्र श्री बलदेव सिंह सांगवान, भैरा भिवानी	5100/-
श्री अशोक पहलवान गांव सोलधा बहादुरगढ़	5100/-
श्री रवीन्द्र कुमार, एफ-32, राजौरी गार्डन, दिल्ली	4100/-
आर्य केन्द्रीय सभा गुड़गांव, हरियाणा	3100/-
श्री कन्हैया लाल जी आर्य गुड़गांव, हरियाणा	3100/-
श्री रवि कुमार जी अन्जनि प्रॉपर्टीज सैक्टर-6, बहादुरगढ़	2100/-
श्री बी.एस. खुल्लर, एम.आई.ई. बहादुरगढ़	2000/-
श्रीमती अनिता सिंघल पत्नी स्व. श्री विनोद सिंघल गुरुहर कृष्ण नगर, दिल्ली	1500/-
श्री विश्वनाथ जी अग्रवाल कॉलोनी, बहादुरगढ़	1100/-
श्री धर्मपाल सिंह, 1308 सैक्टर-1, रोहतक	1100/-
श्री यशपाल जी धनखड़ भट्टे वाला, गोयला कलां झज्जर	1100/-
श्रीमती रामदुलारी बंसल जी वैदिक वृद्धाश्रम बहादुरगढ़	1000/-
श्री जे.के. अग्रवाल, एम.आई.ई. फेस-1, बहादुरगढ़	600/-
श्री प्रभुदयाल जी ठुकराल मनोहर नगर, नई दिल्ली-18	600/-
श्री वेदप्रकाश जी आर्य पाल प्याऊ, नजफगढ़, दिल्ली	511/-
श्री सुरेश जी बहादुरगढ़	501/-
श्री कान्ता जी शर्मा दयानन्द नगर, बहादुरगढ़	501/-
श्री सुभाषचन्द ठुकराल मनोहर नगर, नई दिल्ली-18	500/-
श्रीमती धनपति देवी पत्नी श्री कृपाराम (दुल्हेड़ा) काठमण्डी	500/-

विविध वस्तुएं

श्री मोक्षदलाल अनाजमण्डी बहादुरगढ़	50 किलो गेहूं
फरिश्ता सॉप एण्ड चरखा कै. फैक्ट्री दिल्ली	200/- रूपये, 2 पेटी साबुन
श्री भूप सिंह जी डबास शनि मन्दिर, टिकरी दिल्ली	1 टीन सरसो तेल
श्री शुक्ला जी नैनपाल मन्दिर टिकरी कला, दिल्ली	1 टीन सरसो तेल

विशिष्ट भोजन

श्री कृष्ण कुमार दलाल सुपुत्र श्री मा. महावीर सिंह जी दलाल — 1 समय का विशिष्ट भोजन

श्री सुकर्मपाल सुपुत्र श्री बलदेव सिंह सांगवान गांव भेरा भिवानी — 1 समय का विशिष्ट भोजन

श्री विश्वनाथ जी अग्रवाल अग्रवाल कॉलोनी, बहादुरगढ़ — 1 समय का विशिष्ट भोजन

गौशाला हेतु प्राप्त दान

चिरंजीव अथर्वमल्होत्रा सु. श्री समीर जी मल्होत्रा द्वारका दि.	2100/-
श्रीमती भगवानी देवी जोशी दयानन्द नगर, बहादुरगढ़	500/-
श्री सुमित बंसल अनाजमण्डी, बहादुरगढ़	1100/-
श्रीमती अनिता सिंघल पत्नी श्री विनोद सिंघल गुरुहर कृष्ण नगर, दिल्ली	151 किलो चुरी, 21 किलो गुड़

श्री चन्द्रभान चौधरी (पूर्व डी.सी.पी.) द्वारा एकत्रित दान राशि

श्रीमती चन्द्र कला जी राजपाल, पश्चिम विहार, दिल्ली	500/-
श्रीमती सुभाषनी आर्या जी पश्चिम विहार, नई दिल्ली	250/-
डॉ. पुष्पलता जी वर्मा, विकासपुरी नई दिल्ली	150/-
श्रीमती प्रवीन मेहन्दीरत्ता जी विकासपुरी, नई दिल्ली	150/-
श्री एच.पी. खंडेलवाल विकासपुरी, नई दिल्ली	100/-
श्री सेठी परिवार विकासपुरी, नई दिल्ली	100/-

फर्रूखनगर आश्रम के लिए

श्रीमती चन्द्र कला जी राजपाल पश्चिम विहार, दिल्ली	500/-
श्रीमती सुभाषनी आर्या जी पश्चिम विहार, नई दिल्ली	500/-

मुद्रक व प्रकाशक : स्वामी धर्ममुनि 'दुग्धाहारी', सम्पादक एवं मुख्याधिष्ठाता-आत्मशुद्धि आश्रम बहादुरगढ़, जिला-झज्जर (हरियाणा), पिन-124507 द्वारा मयंक प्रिन्टर्स, 2199/64, नाईवाला, करोल बाग, नई दिल्ली-110005, दूरभाष-41548503, चलभाष-9810580474 से मुद्रित, आत्म-शुद्धि-पथ कार्यालय-आत्मशुद्धि आश्रम से 15 मार्च 2015 को प्रकाशित एवं प्रसारित।

thearyasamaj.org

आत्मशुद्धि आश्रम बहादुरगढ़ चलें !! ओ३म् !! आत्मशुद्धि आश्रम बहादुरगढ़ चलें

राष्ट्र धर्म व मानवता के सबल रक्षक वेद, यज्ञ योग साधना केन्द्र

आत्मशुद्धि आश्रम की ज्ञानगंगा में स्नान हेतु सात दिवसीय पावन ऊर्जामय

निःशुल्क ध्यान योग विज्ञान शिविर एवं बृहद्यज्ञ

सोमवार 23 मार्च 2015 से रविवार 29 मार्च 2015 तक

सानिध्यः- **स्वामी धर्ममुनि जी महाराज**, मुख्यअधिष्ठाता आत्मशुद्धि आश्रम, बहादुरगढ़
यज्ञ ब्रह्माः- **डॉ. स्वामी धर्मेश्वरानन्द जी सरस्वती**, संचालक गुरुकुल पूठ, गाजियाबाद
ध्यान योग साधनाः-**आचार्य राजहंस मैत्रेय**, आत्मशुद्धि आश्रम, बहादुरगढ़
आसन, प्राणायाम प्रशिक्षणः **योगनिष्ठ सत्यपाल जी वत्स**, बहादुरगढ़

जीवन रूपान्तरण के लिए स्वर्णिम अवसर

❑ तनावपूर्ण वातावरण में सुखद व प्रसन्नता पूर्ण जीवन के लिए। ❑ महत्वाकांक्षा रूपी पागल दौड़ से उत्पन्न बैचेनी से मुक्ति के लिए। ❑ दुःख व सुख की मनौवैज्ञानिक प्रक्रिया जानने के लिए। ❑ पारिवारिक सम्बन्धों में प्रेम व सौहार्द की स्थापना के लिए। ❑ जगत के प्रति करूणा और आत्मिक विकास के साथ प्रभु से सहज, सरल सम्मिलन के लिए।

प्रवक्ताः **आचार्य खुशीराम जी, दिल्ली, योगाचार्य रामजीवन जी, रंगपुरी, स्वामी रामानन्द सरस्वती जी, आचार्य रवि शास्त्री**

भजनोपदेशकः **पं. रमेशचन्द्र जी कौशिक झज्जर, योगसाधिका रामदुलारी बंसल और आश्रम के ब्रह्मचारी**

दिनचर्याः सोमवार 23 मार्च 2015 को शिविर उद्घाटन सायं 4 बजे मंगलवार 24 मार्च 2015 प्रातः 5 से 7 बजे तक ध्यान योग साधना पश्चात् आसन प्राणायाम प्रशिक्षण 7:30 बजे से 10 बजे तक यज्ञ भजन उपदेश, 11 बजे से 12:30 बजे तक योग दर्शन स्वाध्याय, शंका समाधान। मध्यांह्नोपरान्त 3 बजे से 5 बजे तक यज्ञ भजन उपदेश, 5:30 से 7 बजे तक साधना रात्रि 8:30 बजे 9:30 बजे तक शंका समाधान व मल्टीमीडिया हॉल में धार्मिक फिल्मों का प्रदर्शन

नोट- शिविरार्थी अपना आवश्यक सामान कॉपी, पैन, योगदर्शन, टॉर्च आदि साथ लेकर आए। ❑ भोजन, आवास की व्यवस्था आश्रम की ओर से निःशुल्क रहेगी। ❑ शिविरार्थी आने से पूर्व सूचित अवश्य करें। आश्रम दिल्ली रोड पर बस स्टैण्ड के निकट है।

संयोजकः

वानप्रस्थी ईशमुनि मो. 9812640989 | **राजवीर जी आर्य, मो. 9811778655**

निवेदक

स्वामी धर्ममुनि दुग्धाहारी
मुख्य अधिष्ठाता आश्रम, 9416054195

सत्यानन्द आर्य
प्रधान ट्रस्ट

विक्रमदेव शास्त्री
व्यवस्थापक आश्रम, 9896578062

दर्शन कुमार अग्निहोत्री
मन्त्री ट्रस्टी

आत्मशुद्धि आश्रम, बहादुरगढ़ (पंजीकृत) जिला झज्जर, हरियाणा-124507

thearyasamaj.org

आत्म – शुद्धि – पथ मासिक

मार्च 2015

छपी पुस्तक – पत्रिका

एच.ए.आर.एच.आई.एन/2003/9646

पंजीकरण संख्या पी/रोहतक-035/2015-17

प्रेषक – आत्मशुद्धि आश्रम
बहादुरगढ़, झज्जर (हरियाणा)-124507

सेवा में –

50वी वैवाहिक वर्षगांठ की झलकियां

(विवरण पढ़े पृष्ठ 5 पर)

श्रीमती चन्द्रवती आर्या धर्मपत्नी
श्री कन्हैया लाल जी आर्य

आशीर्वाद प्रदान करने हेतु उपस्थित स्वामी धर्ममुनि जी, श्री सुखदेव आर्य तपस्वी, स्वामी प्रणवानन्द जी सरस्वती एवम् अन्य गणमान्य व्यक्ति

त्मशुद्धि आश्रम में आयुष्मान कनिष्क के द्वितीय जन्मदिवस की झलकियां

ण पढ़े पृष्ठ 5 पर)

उपस्थित सुकर्मपाल सांगवान परिवार

श्रीमती सुजाता व श्री प्रदीप ढुल एवम् कनिष्क